

• ओ३म •

भारतीय जड़ी बूटी-५

सिरस

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

५
टकी



ओ३म्

भारत की प्रसिद्ध जड़ी बूटी ग्रन्थमाला-५ पुष्प

भारतीय जड़ी बूटी-५

शिरीष (सिरस)

हिन्दू मन्त्र वेद वेदांग विद्यालय

मन्त्रिका, अ

भाग्य क्रमांक... 22...

दिनांक...

“सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु”

प्रभु तेरी कृपा से प्राण, जल तथा विद्या और
ओषधि हमारे लिए सदा सुखदायक हों ।

लेखक :—

स्वामी श्रीमानन्द सरस्वती

प्रकाशक—

हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल भज्जर (रोहतक)

मूल्य १-००

प्रथम संस्करण २१००

शिवरात्रि २०३३ वि०

मुद्रक—

वेदव्रत शास्त्री

आचार्य प्रिंटिंग प्रेस;

दयानन्दमठ, रोहतक।

फोन : २८७४

❀ एषु भवन वेद वेदाङ्ग पुस्तकालय ❀

वा रा ग सी ।

आगत क्रमांक... 2374

दिनांक.....

विषय सूची

क्र०	विषय	पृष्ठ
१	भूमिका	५-७
२	सिरस के नाम	८
३	सिरस के गुण	९-१३
४	सिरस और नेत्र रोग	१४
५	सर्पविष और सिरस	१५
६	शिशिर और आयुर्वेद	१६-३६
७	पीलिया	३६
८	मूत्रकृच्छ्र	३७
९	उदर रोग पर सिरस	३८
१०	प्लेग	३८
११	हृदय रोग पर	४१
१२	वायु रोग पर	४३
१३	कर्ण पीड़ा	४४
१४	उन्माद	४५
१५	अशं	४५
१६	विष विकास	४७
१७	दन्त पीड़ा	५२
१८	बच्चों के दांत	५२
१९	सिर की पीड़ा	५३
२०	कुष्ठ	५४

नम्र-निवेदन

सामान्य व्यक्ति चाहे ग्राम कस्बे बड़े नगर किसी भी स्थान में निवास करते हों प्रायः सभी का एक ही स्वभाव है कि छोटे-मोटे रोगों पर वैद्य, हकीम वा डाक्टर के घर का द्वार शीघ्र ही नहीं खटखटाते । अपने घर खेत जंगल के आस-पास पड़ोस में सुगमता से जो भी घरेलू उपयोगी औषध मिल जाये उसी का भट सेवन करते हैं किन्तु प्रतिदिन दृष्टि में आनेवाले जाने-पहचाने पौधे वृक्ष शिरीष, आक, ढाक, नीम, पीपल बड़ादि का यथार्थ ज्ञान न होने से अनेक रोगों की चिकित्सा इनके द्वारा वे भली-भाँति नहीं कर सकते । जो शिरीष, आक नीमादि सभी लोगों को आगे पीछे घर और बाहर सर्वत्र और हर समय दिखाई देते हैं । जो पदार्थ अत्यन्त सुलभ हैं उनके द्वारा अनेक रोगों की स्वयं चिकित्सा भी कर सकें, इसी कल्याण की भावना से भारत की प्रसिद्ध जड़ी बूटी नाम की ग्रन्थमाला का पञ्चम पुष्प शिरीष [सिरस] आपकी भेंट किया जा रहा है ।

इसमें सामान्य रूप से रोगों का निदान वा पहचान चिकित्सा, उपचार, पथ्य पर भी प्रकाश डाला है । आशा है प्रेमी-पाठक इससे लाभ उठायेंगे । श्री डा० सुधीर आनन्द ग्रेटर कैलाश दिल्ली (वर्तमान में अमेरिका स्थित) वालों ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन में अनुकरणीय धनराशि दान देकर कृतार्थ किया है, इसके लिये उनके सारे परिवार के हम अत्यन्त आभारी हैं ।

—श्रीमानन्द सरस्वती

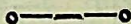
भूमिका

प्रभु प्यारे की सृष्टि में असंख्य जड़ी बूटियां हैं जो परमात्मा भगवान् ने प्राणिमात्र के कल्याणार्थ उत्पन्न की हैं जिनको उत्पन्न करने से पूर्व अपनी परम पवित्र वेद-वाणी द्वारा उनके पवित्र ज्ञान का प्रकाश भी ऋषियों के हृदय में किया। इसीलिए वेद सब विद्याओं के पुस्तक हैं और वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना मानवमात्र का परम धर्म है। क्योंकि जब वेद सब विद्याओं का भण्डार है तो उसी के पढ़ने तथा उसी के अनुसार आचरण करने से हम सच्चे सुख की प्राप्ति कर सकते हैं। किन्तु अल्पज्ञ होने से मानव त्रुटि करता है, भूल का पुतला है इसी के फलस्वरूप दुःख भोगता है, रोगी होता है, बल शक्ति और स्वास्थ्य को खोकर रोता है पछताता है। आश्चर्य की बात है कि इसके चारों ओर रोग की औषध विद्यमान होते हुए भी अपनी अल्पज्ञता के कारण यह रोगी और दुःखी रहता है। "पानी में मीन प्यासी, मुझे देखत आवे हांसी" वाली लोकोक्ति इसी पर पूरी बैठती है, अतः अपनी दुर्गति से यह दुःखी रहता है। इस दुर्दशा से बचाने के लिए वेद के पवित्र ज्ञान से लाभ उठाकर ऋषियों ने आयुर्वेद के शास्त्रों, ग्रन्थों चरक सुश्रुत और निघण्टु आदि की रचना की। उन्हीं के आधार पर तथा प्राणिमात्र को दुःख से बचाने के लिए यह शिरीष नाम की छोटी सी पुस्तक लिख रहा हूं। जिसमें शिरीष जो भारत का प्रसिद्ध वृक्ष है और आयुर्वेद शास्त्र की मानी हुई औषध है और जो सारे भारतवर्ष में ही सर्वत्र पाया जाता है। जिसे छोटे-बड़े बच्चे, हकीम तथा डाक्टर और अनपढ़ ग्रामीण लोग भी जानते हैं तथा कुछ-कुछ औषध रूप में प्रयोग भी करते हैं। किन्तु आयुर्वेद निघण्टु में इसके कुछ विशेष गुणों की ओर संकेत

किया है। जिसका थोड़ा ज्ञान होते हुए भी बड़े वैद्य, डाक्टर भी इसके गुणों से लाभ नहीं उठाते। इसीलिए इसके प्रयोग के बिना इसके गुणों का अनुभव वा ज्ञान बड़े-बड़े वैद्य डाक्टरों को भी कैसे होता। शिरीष के वृक्ष में आश्चर्यजनक गुण हैं। इसे “विषवात-हरः परः” “विषहा स्त्रिदोषशमनः” निघण्टुओं में लिखा है। सर्प दंश तथा सभी स्थावर जंगम विषों की यह परमौषध है। यह हजारों में से कोई एकाध वैद्य वा डाक्टर ही जानता होगा। कुष्ठ, श्वास आदि भयंकर रोगों का उन्मूलन करने में यह अद्वितीय औषध है। महिलाओं के रोग दूर करने के लिए भी सर्वोत्तम औषध है। चक्षुरोगों तथा चर्मरोगों और रक्तरोगों को समूल नष्ट करता है। इसका ज्ञान तथा अनुभव बहुत ही कम व्यक्तियों को है। इसका प्रयोग चिकित्सा में वैद्य, डाक्टर नाममात्र ही करते हैं। जो वृक्ष सारे भारत में सर्वत्र सुलभ और प्रसिद्ध हो तब भी उससे लाभ न उठाये यह महान् आश्चर्य और दुःख की बात है। मेरा ध्यान इसकी ओर तब गया जब मेरे देखते-देखते वेद शास्त्रों के विद्वान्, परम तपस्वी, ब्रह्मचारी पं० विक्रम जी की मृत्यु सर्प के काटने पर गुरुकुल भञ्जर में हुई। उस समय तक हम सर्पदंश की चिकित्सा नहीं जानते थे। कई वैद्यों और डाक्टरों की चिकित्सा करने पर भी उनके अमूल्य जीवन को नहीं बचा सके। तब मेरी आंखें खुली और एक बड़ा धक्का लगा कि सर्पदंश की चिकित्सा का यथार्थ ज्ञान न होने से ही यह बड़ा वज्राघात हुआ। तत्पश्चात् सर्पदंश पर मैंने खोज प्रारम्भ की तथा इस सामान्य वृक्ष शिरीष को सर्प विष की एक आश्चर्यजनक विशेष औषध पाया। बहुत से रोगियों को इसके प्रयोग से बड़ा लाभ हुआ। कण्ठमाला, अनेक चक्षुरोगों को दूर करके इसके विशेष गुणों ने मुझे चिकित्सा कर दिया।

इससे पूर्व पाठकों ने भारत की प्रसिद्ध जड़ी बूटी ग्रन्थ-माला के चार पुष्पों आक, पीपल, नीम और बड़ को बहुत पसन्द किया इसी से उत्साहित होकर इस ग्रन्थमाला का पांचवां पुष्प शिरीष (सिरस) भी अपने पाठकों के लाभार्थ लिख दिया जिससे इस ग्रन्थमाला के प्रेमी इससे यथोचित लाभ उठाकर प्राचीन ऋषि महर्षियों के गुण गाये तथा आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के उपासक तथा भक्त बनें। इसी प्रकार यदि हमारे इन ग्रन्थों के प्रेमियों ने अच्छी रुचि दिखाई तो इसके अन्य पुष्प ढाक, उदुम्बर (गूलर), बबूल (कीकर), खदिर (खैर), रोहितक (रोहिड़ा) आदि पुस्तकों का भी शीघ्र प्रकाशन हो जायेगा। यह सब पाठकों तथा प्रेमियों की रुचि और प्रेम पर निर्भर है। इन पुस्तकों का प्रकाशन श्री स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती के उपलक्ष में हो रहा है। इस पुस्तिका की मुद्रण संचिका भी हमारी पुत्री ब्रह्मचारिणी वेदवती शास्त्री ने परिश्रम करके तैयार की है। मेरा इस पुत्री के लिए आशीर्वाद सहित आभार है।

श्रीमानन्द सरस्वती



शिरीष (सिरस)

धन्वन्तरीय निघण्टु में शिरीष के नाम निम्नलिखित दिए हैं :—

शिरीष के नाम

शिरीषो मृदुपुष्पश्च भण्डिकः शङ्खिनीफलः ।

कपितनः शुकतरुः श्यामवर्णः शुकप्रियः ॥११२॥

धन्वन्तरीय निघण्टु में आम्नादि पञ्चम वर्ग में शिरीष के १-शिरीष २-मृदुपुष्पः ३-भण्डिकः [भण्डकः] ४-शङ्खिनीफलः ५-कपितनः ६-शुकतरुः ७-श्यामवर्ण और ८-शुकप्रिय आदि ये आठ नाम दिए हैं ।

राज निघण्टु में इस प्रकार इसके नाम अङ्कित हैं :—

शिरीषः शीतपुष्पश्च भण्डिको मृदुपुष्पकः ।

शुकेष्टो बहिपुष्पश्च विषहन्ता सुपुष्पकः ॥१८८॥

उद्दानकः शुकतरुर्ज्ञेयो लोमशपुष्पकः ।

कपितनः कलिङ्गश्च श्यामलः शङ्खिनीफलः ॥१८९॥

मधुपुष्पश्च तथा, वृत्तपुष्पः सप्तदशाङ्गयः ।

राजनिघण्टु में पारिभद्रादि नवम वर्ग में शिरीष [सिरस] के ये १७ नाम दिये हैं । १—शिरीषः २—शीतपुष्पः ३—मृदुपुष्पकः ४—बहिपुष्पः ५—सुपुष्पकः ६—लोमशपुष्पकः ७—मधुपुष्पः ८—वृत्तपुष्पः ९—भण्डिकः १०—शुकेष्टः ११—विषहन्ता १२—उद्दानकः १३—शुकतरुः १४—कपितनः १५—कलिङ्गः १६—श्यामलः और १७—शङ्खिनीफलः ये १७ नाम दिए हैं । दोनों निघण्टुओं में आठ नाम तो लगभग एक समान हैं । राजनिघण्टु में ९ नाम अधिक दिए हैं ।

पं० भावमिश्र कृत भावप्रकाश निघण्टु में शिरीष के विषय में निम्न प्रकार से वृत्त दिया है :—

नाम

शिरीषो भण्डलो भण्डी भण्डीरश्च कपीतनः ।

शुकपुष्पः शुकतरुर्मृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥१३॥

शिरीष, भण्डल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, शुकप्रिय ये शिरीष के नौ नाम भावप्रकाश निघण्टु में दिए हैं ।

गुणाः—शिरीषो मधुरोऽनुष्णस्तिक्तश्च तुवरो लघुः ।

दोषशोषविसर्पघ्नः कासव्रणविषापहः ॥१४॥

मधुर, अनुष्ण [मोतदिल] न गर्म न ठण्डा, कड़वा, कर्षला हल्का और शोष सृजन, विसर्प, खांसी, व्रण जखम फोड़ों और विषविनाशक शिरीष का वृक्ष है । उपरोक्त सिरस के गुण हैं ।

भाषाभेद से नाम

संस्कृत—शिरीष, शुकपुष्प, स्वर्णपुष्पकः इत्यादि पहले लिखे गये हैं । हिन्दी—सिरस, सिरसा । मराठी—सिरसी-सिरस । गुजराती—सरसडियो, कालियो, सरस । बंगाली—शिरीष गांछ । कन्नड़—सिरसु । तामिल—सोनागम । तेलगू—सिरशामु । फारसी—दरख्ते जकरिया । अरबी उर्दू—दराश । कोंकण—गारसो । अंग्रेजी—Siris Tree [सिरिस ट्री] ।

शिरीष के गुण

तिक्तोष्णो विषहा वर्ण्यस्त्रिदोषशमनो लघुः ।

शिरीषः कुष्ठकण्डूघ्नस्त्वग्दोषश्वासकासहा ॥१२३॥

शिरीष [सिरस] का वृक्ष स्वाद में तिक्त [कड़वा] कटु है । उष्णप्रकृतिवाला है अर्थात् गर्म तासीर का है । सर्वप्रकार के विषों को नष्ट करनेवाला है । वर्ण को ठीक करनेवाला है और स्त्रियों

के सभी रोगों का नाशक है। लघु [हल्का] कुष्ठ [कोढ़] कण्डु [खुजली] दाद का विनाशक है। त्वग्रोग अर्थात् सभी चर्मरोगों को दूर करता है। श्वास, दमा, कास [खांसी] और श्वास रोगों को दूर करता है।

राजनिघण्टु में शिरीष के गुण

—शिरीषः कटुकः शीतो विषवातहरः परः ।

पामासृक्कुष्ठकण्डूतित्वग्दोषस्य विनाशनः ॥१६०॥

शिरीष [सिरस] कटु [कड़वा] शीत [ठण्डा] विष रोगों और वायु के रोगों का परम शत्रु है। वायु रोग और विषों को सबसे अधिक दूर करनेवाला है। पामा [खुजली] दाद, रक्तदोष, कुष्ठ, कण्डूति [चर्मरोग] का विनाश करनेवाला शिरीष को माना है। पाठभेद से इसे अशं [बवासीर] को दूर करनेवाला स्वीकार किया है।

वर्णन

सिरस के वृक्ष बहुत ऊँचे-ऊँचे होते हैं। काले सिरस के वृक्ष छोटे-छोटे होते हैं। यह भारत के मैदानी क्षेत्र के सभी प्रान्तों में पाया जाता है। मरुभूमि बागड़ तथा बांगर में भी यह खूब उपजता है। इसके पत्ते एक से लेकर डेढ़ इंच तक लम्बे इमली वा आंवले के पत्तों के समान ही आकारवाले किन्तु उनसे बड़े होते हैं। एक वृन्त वा शाखा में चार ४ से ८ आठ जोड़े पत्तों के होते हैं। शीतकाल में इस वृक्ष के पत्ते सब झड़ जाते हैं। शिरीष के वृक्ष जंगल में खूब होते हैं। इसके फूल अत्यन्त कोमल और सुगन्धित होते हैं। सफेद सिरस के फूल कुछ बड़े होते हैं। इनका रंग कुछ हरापन लिए पीला है। इसकी फलियाँ चरपरी भूरे रंग की छः से बारह इंच लम्बी होती हैं। काले सिरस की कुछ भीड़ी किन्तु सफेद

सिरस की चौड़ी होती हैं। हरेक फली में दस-बारह बीज वा कुछ अधिक रहते हैं। जो बहुत सख्त होते हैं। फूल सुन्दर कोमल तथा तीव्र सुगन्धि वाले होते हैं। शिरीष के वृक्ष लगाने से प्रायः सर्वत्र ही लग जाते हैं। भारतीयों के प्राचीन काल से ही ये नीम, बड़ और पीपल तथा सिरस प्रिय वृक्ष रहे हैं। इस वृक्ष के नाम पर अपने बहुत नगर व ग्राम भी बसाये। महाभारत में लिखा है—“शैरीषकं महेत्थं च वशे कृत्वा महाद्युतिः” शैरीषक [सिरसा] और महेत्थं [महम] को नकुल ने जीता। शैरीषक, सिरसा, शिरसा, सिरसपुर, सिरसागंज, सिरसी, सिरसली आदि अनेक ग्राम तथा नगर और प्रान्त सिरस के नाम से प्राचीन काल में बसाये जो आज तक भी मिलते हैं। इस वृक्ष के पेड़ जहाँ बहुत ऊँचे-ऊँचे होते हैं वहाँ बहुत मोटे होते हैं। इसकी लकड़ी इमारत [भवन निर्माण] में काम आती है। किसानों के कोल्हू, मैज और हल जुआ भी इससे बनते हैं। इसकी लकड़ी पकने पर शीशम के समान रक्तवर्ण [लाल] की हो जाती है। अर्थात् वृक्ष के पूर्ण जवान होने अथवा पक जाने पर लाल होने से सिरस की लकड़ी सुदृढ़ होती है और भवन निर्माणों के लिए उपयुक्त हो जाती है। जब अधिक पुराना हो जाता है तो खोखला होकर निबल [कमजोर] हो जाता है तथा इसकी लकड़ी कमजोर पड़ जाती है। प्रायः सभी वृक्षों की यही गति होती है। काले सिरस के पत्ते इमली के समान होते हैं इतना ही अन्तर है कि शिरीष के पत्ते कुछ बड़े होते हैं।

काले सिरस के गुण

आयुर्वेदिक मत से सिरस कड़वा तथा शीतल होता है। विष, खुजली, दाद, चर्मरोग, रुधिरविकार, कुष्ठ, कण्डू और सभी त्वचा के रोगों को दूर करनेवाला है।

सिरस बवासीर, विष पसोना, चर्मरोग, सूजन और विसर्प को दूर करता है।

भावप्रकाश में भी उपरोक्त गुण सिरस के हैं जो ऊपर लिखे जा चुके हैं।

इसकी जड़ सूर्यावर्त्त, आंधाशीशी रोग को दूर करती है। इसकी छाल कड़वी, विषनाशक, कृमिनाशक तथा वातरक्तरोग की नाशक है। बवासीर, सूजन, विसर्प, खाँसी और सर्प व चूहे के विष को दूर करती है। इसके पत्ते आंख के दुखने को दूर करते हैं इसके पुष्प दमा और सर्प विष में उपयोगी होते हैं। इस वनस्पति के सभी अंग सर्पविष को दूर करते हैं। काले तथा सफेद सिरस के गुण लगभग एक ही समान होते हैं।

यूनानी मत

यूनानी वा हिकमत के मत में इसकी जड़ संकोचक और नेत्र-अभिष्यन्द [आंख दुखने में] रोग में लाभ पहुँचाती है। इसकी छाल कृमिनाशक, दन्तशूल को दूर करनेवाली, मसूड़ों को बल देने वाली तथा कुष्ठ, बहरापन, विस्फोटक [फोड़ों], खुजली, उपदंश, पक्षाघात और निर्बलता को दूर करने में लाभदायक है। इसके पत्ते रतोंधी को दूर करते हैं। इसके फूल कामोद्दीपक, स्निग्ध और फोड़ों को पकानेवाले होते हैं। इनको सूँघने से आंधाशीशी मिटती है। इसके बीज भी कामोद्दीपक होते हैं, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ानेवाले तथा सुजाक व कण्ठमाला में लाभदायक हैं। इसका तैल श्वेत कुष्ठ पर लगाने से लाभ होता है।

इसके बीज संकोचक तथा धातु को पुष्ट करनेवाले होते हैं। अतिसार को दूर करते हैं। इसके पत्तों का पुल्टिस बनाकर त्वचा के रोग फोड़े फुन्सी और सूजाक के ऊपर बांधा जाता है। इसकी छाल चूर्ण अंजन बनाकर आंख के रोगों को दूर करने के लिए

नेत्रों में डाला जाता है। इसकी छाल का काढ़ा मुख के छालों, मसूड़ों की सूजन दूर करने के लिए कुल्ले करने में प्रयुक्त होता है। इसके काढ़े के पीने से रक्त शुद्ध होता है तथा यह कामोद्दीपक है।

इसके पत्तों का रस रतौंधी को दूर करने के लिए आंखों में डाला जाता है। इसको भीतरी उपचारार्थ पिलाया भी जाता है। इसकी छाल का काढ़ा दांत के मसूड़ों को सुदृढ़ बनाता है। कुल्ले करने से बहुत लाभ होता है। इसकी छाल का चूर्ण १ माशा तथा गोघृत तीन माशे के साथ मिलाकर सेवन करने से उत्तम शक्ति-वर्धक और रक्तशोधक औषध सिद्ध हुआ है। इसके बीज वीर्यस्तम्भक और कामोद्दीपक होते हैं। इसके बीजों का चूर्ण २ माशा, खांड चार माशा मिलाकर प्रतिदिन गाय के गर्भ दूध के साथ लेने से वीर्य को बहुत गाढ़ा करता है। इसके बीजों को जल के साथ लेप करने से गले की गांठें बैठ जाती हैं अर्थात् बेल वा कण्ठमाला को दूर करने की यह अच्छी औषध है।

सिरस और नेत्ररोग

शिरिष के बीज बलप्रद वा संकोचक हैं। यह उदर के रोगों और दुर्बलता में प्रयोग होते हैं। स्फोट, फोड़े, कण्डू वा शोथमय प्रदेश पर इसके पत्तों का लेप करते हैं। त्वक् (छाल) चक्षुरोगों में प्रयुक्त होता है। शिरिष की छाल का क्वाथ मुख के जख्मों में कुल्ले करने से लाभ करता है। यह शक्तिप्रद बल्य और रसायन है।

शिरस और नेत्ररोग पर यूनानी मत

यूनानी हकीमों का मत है कि नेत्रों के हर प्रकार के रोगों को दूर करने में सिरस के प्रयोग से बहुत ही चमत्कारिक लाभ होता है। कराबदीन जुकाई नामक पुस्तक में लिखा है कि मेरठ के

शाहजादे की दोनों आंखों में फोले पड़ गए । अनेक हकीमों ने अनेक प्रकार की औषधियों का प्रयोग किया किन्तु किसी से कुछ भी लाभ नहीं पहुँचा । तब एक हादी हुसैन नाम के हकीम ने सिरस के योग को जो नीचे लिखा है बनाकर शाहजादे की आंखों में डाला । जिससे वे फोले कट गये । योग इस प्रकार है ।

कांच की हरी चूड़ियां १ तोला, मुर्गी के अण्डों के छिलके $4\frac{1}{2}$ माशे (न मिले तो सफेद पुनर्नवा की जड़ ले लेवें) हल्दी २ माशे । सबसे पहले कांच की चूड़ियों को जल के साथ तीन दिन तक खूब रगड़ें घिसें फिर इनके खरल हो जाने पर शेष सब औषधियों को मिलाकर अच्छी प्रकार खरल करें और बारीक सुर्मा बनाकर दिन में दो बार अच्छी प्रकार खरल करें और बारीक सुर्मा बनाकर दिन में दो बार आंखों में डालें और ऊपर से सिरस के पत्तों की भांप दें और उन पत्तों को बांधें । इससे आंख का फोला थोड़े ही दिनों में कट जाता है ।

२—खिरनी के बीजों को पीसकर उनको चार-पाँच दिन तक सिरस के पत्तों के रस में खरल करके फिर पाँच छः दिन बड़ के दूध में खरल करें । इसे बारीक सुर्मा बनाकर आंख में डालने से आंख का फोला दूर होता है ।

३—हकीम जफरुल्ला खां लिखते हैं—सिरस के पत्तों का रस ४० तोला, सेंधा लवण, फिटकड़ी भुनी हुई, नौशादर, सुहागे की खील और सज्जी क्षार ये सब वस्तुयें दस-दस तोला बारीक पीसकर सब मिट्टी के कोरे बर्तन में डालें और उसका मुख कपरोटी से बन्द करके रख दें और तीन दिन के पश्चात् उसका मुख खोलें उसमें सफेद रंग की फूल के समान औषध निकलेगी इस औषध के समान काला सुर्मा मिलाकर खूब खरल करें और इसको आंखों में डालें तो सब रोग दूर होंगे ।

सर्पविष और सिरस

हकीम जलालुद्दीन लिखते हैं कि शिरस की अन्तर छाल, शिरस की जड़ की छाल, सिरस के हरे पत्ते और सिरस के हरे फूल ये सब वस्तुएं बीस-बीस तोला लेवें और पुरुष के मूत्र में पीसकर नुगदी बनालें, फिर इसमें १०० तोला मूत्र डालकर आग पर चढ़ा दें। जब वह खूब पकने लगे तब उसमें २५ तोला गोघृत भी डाल दें। उसमें ही वह नुगदी पहले ही डाल देनी चाहिए। मन्दी आंच से पकायें। जब केवल घृत ही शेष रह जाए तो निधारकर छान लेवें। सर्पदंश के रोगी को यह घृत पिलाने से सर्पविष नष्ट होता जाता है। साधारण विष में एक रत्ती घृत दें और विषेले सर्प के विष पर तीन चार रत्तल घी पिलाना चाहिए। हमारा मत है इतनी थोड़ी मात्रा से सर्पदंश पर लाभ नहीं हो सकता। मात्रा १ तोले से पांच तोले होनी चाहिए। हम भी बहुत वर्षों से सर्पदंश की चिकित्सा करते हैं। मात्रा रक्तियों में नहीं तोलों में होनी चाहिए।

सर्पदंश में सफेद मिर्चों को सिरस के फूलों के रस में सात भावनायें दें और छाया में सुखाकर उनको बारीक पीसकर चूर्ण बनालें। सर्पदंश के रोगी को यही सुंघायें तथा उसी का आंख में अंजन डालें तो सर्पविष में लाभ होता है।

अकबरनामा में लिखा है कि एक दुर्ग [किले] में बहुत वर्षों का इकट्ठा किया हुआ बहुतसा अन्न रखा हुआ था। उस किले में रखे अन्न को खाने वाले सभी व्यक्तियों को सूजन और जलोदर हो गया और अनेक औषधों के प्रयोग से भी लाभ नहीं हुआ। अन्त में जिन-जिन व्यक्तियों को सिरस की छाल का काढा पिलाया गया उन सबको लाभ होने लगा। इसके परिणामस्वरूप वहां सिरस की छाल इतनी महंगी हो गई कि रुपये की रुपये भर बिकने लगी।

शिरिष के बीज

एक यूनानी हकीम का कथन है कि सिरस के बीजों के चूर्ण को द्विगुण मधु (शहद) में मिलाकर मिट्टी वा शोशे के पात्र में रख कर उसका मुख बन्द करके चालीस दिन तक गेहूं के कोठे में दबा दें फिर निकाल लें और मात्रा तीन माशे प्रातः सायं लेवें तो रक्त विकार, उपदंश, कंठमालादि रोग दूर होते हैं ।

बवासीर

सिरस के बीज, यवक्षार, सज्जीक्षार, कलिहारी की जड़ और सैन्धा नमक सब समभाग लेकर थोहर के दूध में खरल करें और गोली बनालें फिर तीन दिन तक गोमूत्र में घिसकर बवासीर के मस्सों पर लेप करें तो सर्व प्रकार की बवासीर में लाभ होगा ।

शिरिष और आयुर्वेद

कंठमाला :—जिसे खिनाजीर, गण्डमाला बेलादि के नाम से कहा जाता है । यह बहुत ही भयानक रोग है कितने रोगियों की तो इससे मृत्यु होती देखी गई है । यह मनुष्य के कंठ के दायें बायें नीचे चारों ओर गांठों के रूप में निकलती है । गांठें बड़ी सख्त होती हैं न तो ये सरलता से पकती हैं न बैठती हैं । कभी यह एक ही गांठ के रूप में निकलती है कभी बहुत सी गांठें निकलती हैं । कभी एक समय में एक तथा कभी अनेक भी निकलती हैं । कभी एक अच्छी हो जाये तो दूसरी गांठ निकल आती है । इसमें सिरस के वृक्ष का उपयोग बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है । मात्रा—कल्क की मात्रा १ माशे से ४ माशे तक है । स्वरस की मात्रा १ से २ तोले तक है । क्वाथ की मात्रा ५ से १० तोले तक है ।

१. योग :—शिरस के बीजों को कूट छानकर बारीक चूर्ण बनायें । मात्रा ६ माशे प्रातः सायं जल के साथ इसकी फांकी ले

लेवें । अथवा एक तोला शहद में मिलाकर प्रातः सायं इसको चाटें ।

२. इसके बीजों को बारीक पीसकर और इसके चूर्ण को गोमूत्र में पीसकर कंठमाला की गांठों पर प्रातः सायं दो बार लेप करें ।

३. शिरस की छाल वा पंचांग के क्वाथ से बेल वा कंठमाला की गांठों को खूब सेकना तथा भफारे देना गर्म-गर्म से घोने से भी बहुत लाभ होता है ।

कंठमाला को गण्डमाला, गलगण्ड, गलगन्धि बेल आदि अनेक नामों से आयुर्वेद ग्रन्थों में लिखा गया है । प्रायः यह रोग गले वा कंठ में वा इसके आस पास होता है । इसको गले वा कंठ का रोग कहना ही उचित है क्योंकि यह गांठों के रूप में गले में वा गले के (गरदन) ग्रीवा के चारों ओर होता है जैसे कंठ में माला को चारों ओर वा सारे गले में धारण करते हैं इसीलिए कंठमाला वा गण्डमाला इस रोग का नाम पड़ा है ।

लक्षण

कंठ गले वा ठोड़ी के स्थान पर छोटी बड़ी सख्त न हिलने वाली स्थिर गांठें उत्पन्न होकर सूजन के समान लटकती हैं । ये बेल वा वेर वा अंडकोश की गांठ के समान होती हैं । वात पित्त कफ और मेदे चर्बी के दूषित होकर गले के स्थान पर गले की मणिया नाम की नाड़ी के सहारे जो गांठों के समान सूजन उत्पन्न होती है इसी को गलगण्ड और कंठमाला वा बेल कहते हैं । यूनानी और तिब्बत वाले इसे खिनाजीर कहते हैं । उनका कथन है खिनाजीर सूअर (शूकर) को कहते हैं । यह रोग सूअर को होता है फिर उसी से मनुष्यों को लग जाता है । हकीमों का कथन है कि जो सूअर का मांस खाते हैं उनको ही यह रोग होता है किन्तु यह बात सर्वथा

मिथ्या है क्योंकि वैदिक युग में तो सर्व प्रकार के मांस भक्षण सर्वथा निषिद्ध थे तब इस कंठमाला रोग का उल्लेख क्यों मिलता है। यथार्थ में यह त्रिदाष वात-पित्त कफादि के दूषित होने से कंठमाला की ग्रन्थि उत्पन्न होती है उसी दोष के लक्षण उन ग्रन्थियों में देखने में आते हैं। जैसे वात दूषित होने पर जिन गलगण्ड की गांठों में सूई चुभाने की सी पीड़ा हो और उनका रंग काला वा नीला हो और काले रंग की सूजी हुई नसें दिखाई देवें जो शनैः शनैः बढ़ती हों बढ़ने में बहुत अधिक समय लेवें। मुख का स्वाद खराब हो गला वा तालु शुष्क रहता हो और गांठें पकती न हों ये सब लक्षण वातज कंठमाला के हैं। प्रायः वायु की ग्रन्थियां शायद ही पकती हैं।

कफज कंठमाला में ग्रन्थियों का रंग त्वचा के समान स्थिर और भारी होता है। इसमें थोड़ी-थोड़ी पीड़ा होती है। बहुत देर में पकता है, पकते समय कुछ पीड़ा अधिक होती है साथ ही खुजली भी होती है। स्पर्श करने में ग्रन्थि ठण्डी और बड़ी प्रतीत होती है। मुख का स्वाद मीठा तथा चिकना होता है। गले तथा तालु में कफ भरा रहता है।

मेदज गण्डमाला में ग्रन्थियों का रंग पीला तथा कुछ श्वेत होता है। यह छूने में नर्म होती है। इनमें पीड़ा नहीं खुजली होती है। घीयाकद्दू के समान ये सूजन होकर लटकती हैं। गले में हर समय घर-घर का शब्द आता है। शरीर के बढ़ने के साथ ये गांठें बढ़ती हैं। मुख का स्वाद तैल के समान चिकना रहता है।

असाध्य कंठमाला

जब रोगी कठिनता के साथ श्वास लेता है सारा शरीर कोमल हो जाता है रोगी सर्वथा निर्बल होता है। कंठ से शब्द

बिल्कुल नहीं निकलता । रोग एक वर्ष से अधिक का हो रोगी को ज्वर भी रहता हो तो रोग असाध्य वा बहुत कष्टसाध्य होता है ।

अयुर्वेदिक चिकित्सा

शिरीष स्थावर जंगम सब प्रकार के विषों को दूर करनेवाला है । विषैले फोड़ों मुगली फोड़े नासूर लोकलसोर कंठमाला की ग्रन्थियों को दूर करने में अत्यन्त लाभदायक औषध है ।

विषनाशक शिरीषारिष्ट

योग शिरीषारिष्ट—पचेत्तुलार्धं द्विद्रोणे शिरीषस्य जले सुधीः ।

पादशेषे कषायेऽस्मिन् क्षिपेद् गुडतुलाद्वयम् ॥

क्वाथ द्रव्य सिरस की छाल 2½ सेर जौकुट करके दो द्रोण जल में (८० सेर) पकाकर चौथा भाग १० सेर शेष रहने पर उतार कर छान लें । इसके ठंडा होने पर प्रक्षेप औषध डालें । प्रक्षेप—

कृष्णाप्रियंगुकुष्ठैला नीलिनीनागकेशरम् ।

रजन्यौ पलमानेन दद्यादत्र च नागरम् ॥

ठंडे होने पर काढ़े में १० सेर गुड़ घोल दें । फिर पीपल, प्रियंगु, कूठ, इलायची बड़ी, नील का पंचांग, नागकेशर, हल्दी, दारु हल्दी (दोनों) सौंठ ये सब (४) चार चार तोले जौकुट करके डालें ।

सन्धान

मासादूर्ध्वं जातरसं यथामत्रे प्रयोजयेत् ।

शिरीषारिष्ट इत्येष विषव्यापद्विनाशनः ॥

सबको घड़े में भरकर कपड़मिट्टी से मुख बन्द कर देवें और एक मास पश्चात् खोलकर प्रयोग करें । मात्रा दो तोले समान जल मिलाकर भोजन के एक घण्टा पश्चात् शीशे के गिलास में प्रातः सायं दोनों समय लेवें । सर्पदंश आदि विष का अधिक प्रभाव हो तो यथोचित मात्रा में अधिक बार भी देवें ।

इसके गुण सर्वप्रकार के विषों को दूर करने के हैं। इस अरिष्ट को बहुत कम वैद्य वा रसायनशाला बनाती हैं। इसका निर्माण हमने गुरुकुल भुज्जर की रसायनशाला में करके सैकड़ों रोगियों को ठीक किया है। सर्पदंश बिच्छूविषादि जंगम विषों पर तथा संखिया वत्सनाभ कुचलादि स्थावर विषों पर यह अमोघास्त्र अर्थात् अचूक औषध है। कंठमाला नासूर नाड़ी व्रण आदि विषैले फोड़ों पर रामबाण के समान कार्य करता है। पाठक सभ्य पढ़ने पर इसका प्रयोग करके लाभ उठायें। जो सड़े हुए व्रण, फोड़े किसी औषध से अच्छे न होते हों वे इस शिरीषारिष्ट के प्रयोग से बहुत शीघ्र तथा समूल नष्ट होते हैं। कंठमाला की गांठों की भी अचूक औषध है। शिरीष के छाल के स्थान पर शिरीष का पंचांग भी डाला जा सकता है।

शिरीष के बीजों का चूर्ण

शिरीष बीजों के चूर्ण को द्विगुण मधु में मिलाकर एक चीनी वा मिट्टी के पात्र में कपरोटी से बन्द करके उस पात्र को ४० दिन गेहूं के ढेर वा गेहूं के कोठे में दबा दें। फिर प्रतिदिन मात्रा तीन माशा लेने से सर्वप्रकार के रक्तविकार कण्ठमाला, उपदंश आदि रोग दूर होते हैं। कुछ वैद्यों का मत है कि औषध के पात्र को घूप में एक सप्ताह रखने से औषध सेवन के लिए ठीक हो जाता है।

शिरीष के बीजों का चूर्ण छः मासे खाकर जल पीवें अथवा शहद १ तोला मिलाकर चाटें तो इससे कण्ठमाला की गांठों का सूजन उतर जाता है। तथा सिरस बीजों का लेप करने से भी कण्ठमाला का सूजन उतर जाता है। शिरीष के पंचांग का क्वाथ मधु मिलाकर पीने से गलगण्ड की गांठें ठीक हो जाती हैं। पंचांग के गर्म-गर्म क्वाथ से भफारा तथा सेक करने से भी कंठमाला की गांठें ठीक हो जाती हैं। पत्रों छाल वा इस पंचांग का जल में रगड़

कर लेप करने से कण्ठमाला की गांठों का सूजन दूर होता है। निष्कर्ष यह है कण्ठमाला तथा अन्य फोड़ों की शिरीष अनुभूत तथा परीक्षित उत्तम औषध है।

शिरीष अरिष्ट का लगातार सेवन करने से कण्ठमाला शीघ्र तथा समूल नष्ट होती है। अतः रोग दूर करने के लिए इसका प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

औषध

शिरस की अन्तरछाल १ पाव को कूटकर १ सेर जल में उबालें। १ पाव जल शेष रहने पर उसको छान लें और उसमें सिरस के बीज १ तोला, शिरस के पत्ते १ तोला इन दोनों का चूर्ण कपड़ छान करके मिलायें तथा इसमें १ पाव मधु मिलाकर थोड़ा आग पर पकाकर इसे गाढ़ा कर लेवें। यह शिरीष पाक तैयार है इसकी मात्रा ६ मासे से १ तोला है इसे खायें, इसके निरन्तर एक दो मास के सेवन से कण्ठमाला ठीक हो जाती है। यह मूत्रकृच्छ्र तथा जुकाम प्रतिश्याय पीनस को भी ठीक करता है।

जुकाम प्रतिश्याय

१. जब जुकाम बहता न हो तो शिरस के बीजों की नसवार बारीक पीसकर बनायें। उसे सूँघें, छींकें आयेंगी, इससे जुकाम बहने लगेगा। इससे सिर की पीड़ा भी दूर होती है।

२. कण्ठमाला के प्रकरण में लिखा हुआ शिरीष पाक भी जुकाम [पीनस] की अच्छी औषध है उसका सेवन गोदुग्ध के साथ करें।

ताम्र भस्म

३. ५ तोले सिरस के बीज जलभंगरे के रस में खरल करें। यहाँ तक खरल करें कि ३० तोला जलभंगरे का रस इसमें सूख

जाये, इसको दो भागों में बांट दें। आधा भाग हांडी में नीचे बिछा दें। उसके ऊपर नीचे छः मासे बर्किया हड़ताल बिछाकर बीच में तांबे का पुराना पैसा शेर की मूर्ति वाला रख दें। ऊपर भी हड़ताल तथा शिरस के बीजों वाला भाग पैसे के ऊपर रख दें। हड़ताल खूब अच्छी प्रकार पीसकर बिछावें। फिर कपरोटी करके हांडी को सुखालें। ७ वा ८ आठ सेर उपलों की आग में हांडी रखकर फूंक दें। सर्वांग शीतल होने पर हांडी निकालकर खोलकर सावधानी से ताम्र भस्म निकाल लें। हड़ताल के कारण भस्म का कुछ भार बढ़ेगा। यदि एक बार में भस्म न बने तो दूसरी बार आग दें। इसकी मात्रा एक चावल से चार चावल तक है। इसे खिलाकर ऊपर से स्वर्णक्षीरी का रस १० तोला पिला दें। फिर तीन घण्टे पश्चात् १० तोले गोघृत पिलावें, इससे दो चार वमन तथा दस्त होंगे। सारा दूषित मल निकल जायेगा। इसी प्रकार तीन दिन तक सेवन करायें। सेवन काल में खूब घी डालकर चूर्मा [चूरी] खिलायें। आशा है कि तीन दिन में ही कण्ठमाला की गांठें सूखकर समाप्त हो जायेंगी। दुर्बल रोगी को आधा चावल वा अधिक से अधिक १ चावल की मात्रा देनी चाहिये। यह कण्ठमाला की अच्छी औषध है। डा० देसाई का मत है "शिरस के बीजों का लेप करने और इनका चूर्ण खिलाने से वैद्य को यश मिलता है क्योंकि इनके सेवन से गण्डमाला में बहुत लाभ होता है।"

शिरीष पाक

४. इसके प्रयोग से बहता हुआ जुकाम रुक जाता है।

योगः—शिरीष की अन्तर्छाल [छायाशुष्क] १ पाव कूटकर छान लें और १ सेर जल में उबालें, जब १ पाव रह जाये तो मल कर छान लें तथा उसमें १ पाव शुद्ध मधु मिलाकर आग पर

पकाकर गाढ़ा कर लें और उसमें शिरस के बीज १ तोला, पत्तों का चूर्ण एक तोला बारीक करके कपड़छान किया हुआ मिला दें। यह सिरस पाक बन गया, इसमें कपड़छान किया हुआ तीन तोला त्रिकुट्टे का बारीक चूर्ण नीचे उतारने के पीछे मिला लें। मात्रा तीन माशे से एक तोले तक, सेवन प्रातः सायं वा यथावसर करें। इससे जुकाम प्रतिश्याय, पीनस सब समूल नष्ट होंगे।

५. शिरस के बीजों को छाया में सुखाकर खूब बारीक पीसकर कपड़छान कर लें तथा इसे शीशी में सुरक्षित रखें। इसकी नसवार से छींकें आयेंगी। नाक बहकर सब रुका हुआ मल निकल जायेगा। इसी नसवार को अधिक तेज बनाना हो तो आक के दूध में सिरस के बीजों को एक बार भिगोकर सुखाकर कूट छानकर नसवार बना लें तो तुरन्त जादू के समान प्रभाव-शाली नस्य बन जायेगी। सूँघते ही तुरन्त छींकें आयेंगी, प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी। सब मल निकलकर शान्ति मिलेगी उपरिलिखित औषधों पर कुछ व्यय नहीं होता। सिरस का वृक्ष सर्वत्र सुलभ है। थोड़ा परिश्रम करने का प्रयास कर औषध का निर्माण कर लें। अपने तथा औरों के काम आयेंगी। जुकाम को साधरण समझ कर सब ही इसकी चिकित्सा न करके पीछे बड़ा कष्ट उठाते हैं और बहुत घन व्यर्थ ही व्यय करते हैं। जुकाम बिगड़कर खांसी, यक्ष्मा, तपेदिक तक हो जाती हैं। एक ऐतिहासिक कथा भी जुकाम के विषय में प्रचलित है कि एक बार रस्तम पहलवान को जोर का जुकाम हो गया और वह उसके दुःख के कारण अखाड़े में कुश्ती के अभ्यास के लिए नहीं गया। उसने विचार किया कि अन्य साथी पहलवान घर पर जाकर अखाड़े में चलने के लिये विवश करेंगे। शरीर और मन उसका साथ दे नहीं रहे थे। रस्तम पहलवान ने

सोचा साथियों को कैसे मनाऊंगा कि वे मुझे विवश करके अखाड़े में न ले जायें। जुकाम तो साधारण रोग है इसके कारण साथी नहीं मानेंगे। हंसी मजाक और उड़ायेंगे। यह सोचकर उसने अपने शरीर पर तलवार से अनेक जखम कर लिये कि अब जखमों को देखकर साथी छोड़ देंगे तथा अखाड़े में नहीं ले जायेंगे। जब रुस्तम पहलवान अखाड़े में नहीं गया तो उसके साथी पहलवान उसे लेने के लिये उसके घर पहुँच गये। रुस्तम ने अपने शरीर पर तलवार के आघात वा जखम दिखाये और विवशता प्रकट की। साथियों ने कहा कि आप जरूर अखाड़े में चलें ये चोट और जखम तो अखाड़े की मिट्टी लगते ही सब ठीक हो जायेंगे। ये क्या चोट हैं जिससे इतने बड़े पहलवान होकर घबरा गये जो अखाड़े में भी नहीं आये। उसे खींचकर ले जाने लगे और कहने लगे हम तो यह समझ गये थे कहीं रुस्तम को जुकाम हो गया होगा इसीलिए वह नहीं आया। पहले रुस्तम हंसा और कहा बात यही थी मुझे जुकाम ने हो दुःखी कर रखा है किन्तु मैंने यह समझा कि जुकाम को साधारण रोग मानकर आप लोग मानेंगे नहीं इसलिए तलवार के जखम किये थे। क्योंकि जखमों को देखकर आप मुझे अखाड़े में ले जाने से छोड़ देंगे। आप जखमों को कुछ समझते ही नहीं, जुकाम को सबसे बड़ा रोग मानते हैं। मुझे भी यह ज्ञान होता तो क्यों सारे शरीर पर तलवार से जखम करता। इससे पाठकों को अवगत होगया होगा कि जुकाम प्रतिश्याय बहुत भयंकर रोग बन जाता है। यदि इसकी चिकित्सा आरम्भ में न करके उपेक्षा की तो इसके बिगड़ जाने से खांसी, दमा, तपेदिक, सिर पीड़ा अनेक दुःसाध्य रोग उत्पन्न हो जाते हैं। प्रसिद्ध वैद्य प्रतिश्याय को सब रोगों की जननी मानते हैं। अतः जुकाम की चिकित्सा

सावधानी से प्रारम्भ में की जाये तो सरलता से शीघ्र ही आराम हो जाता है। किन्तु बिगड़ जाने पर बहुत ही कष्ट उठाने पड़ते हैं तथा धन व्यय करना पड़ता है।

दशांग लेप

शिरस की छाल, मुलहटी, अगर, लाल चन्दन, इलायची, बाल-छड़, हल्दी, दारू हल्दी, कुठ, मुश्कवाला इन दस वस्तुओं को सम भाग लेके खूब बारीक पीस कपड़छान करलें। फिर जल में घोटकर कंठमाला, फोड़े, सूजन तथा विसर्प की सूजन, गन्दे जखम और विसर्प रोग दूर होते हैं।

धातु रोगों पर

१. शिरीष के पुष्पों [फूलों] का चूर्ण मात्रा १ मासे से तीन मासे तक लेकर प्रातः सायं जल वा गोदुग्ध के साथ लेने से स्वप्नदोष को रोकता है तथा वीर्य को गाढ़ा करता है।

२. शिरीष के बीजों का चूर्ण १ माशा, मिश्री २ मासे मिलाकर गाय के थोड़े गर्म दूध के साथ लेने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

३. शिरीष की छाल का चूर्ण १ मशा ४ मासे गोघृत में मिलाकर लेने से बल शक्ति खूब बढ़ती है।

४. शिरस के बीजों की गिरी १ तोला, मिश्री २ तोला अति सूक्ष्म पीसकर कपड़छान करलें। इसे बारीक कपड़े पर फैलाकर किसी धातु के कलीदार पात्र पर रखें, उसके ऊपर गौ का पाव भर वा आधा सेर दूध निकाल लें औषध तथा दूध छनकर पात्र में आ जायेगा। प्रातःकाल उसी समय रोगी को पिलावें। कुछ वैद्यों के मत में रोगी उसी समय खड़ा होकर पीवे तो अधिक लाभ होगा। इससे वीर्य गाढ़ा होकर पुंस्त्व शक्ति बढ़ती है, स्वप्नदोष तथा अन्य धातु रोग प्रमेहादि नष्ट होते हैं।

५. सिरस के बीजों का तैल जो पाताल यन्त्र से निकाला जाता है। इस तैल की पैरों के तलवों पर मालिश करने से पुंस्त्व शक्ति बढ़ती है।

शक्तिवर्धक योग :—सिरस की हरी-हरी ताजा फलियां तोड़ लें और इनके बीज निकालकर खरल वा कुण्डी में पीसलें और खट्टर के एक गज वस्त्र को छाया में फैलाकर यह पीसी हुई औषध उसके ऊपर फैला दें तथा इस प्रकार ४०, ४५ तहें एक दूसरे के ऊपर फैला दें। इस वस्त्र में से १ तोला काटकर गाय के एक सेर दूध में डालकर उवालें, जब दूध आध सेर रह जाए तो दूध को छानकर २ तोले मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें। ४० दिन के प्रयोग से खूब शक्ति तथा बल बढ़ेगा। प्रयोग करके लाभ उठायें।

पुंस्त्वार्थ रजत भस्म—शुद्ध रजत (चांदी) के बारीक पत्र बनवायें और उनको सिरस के पत्तों की नुगदी में बन्द करके उस पर एक गीला वस्त्र लपेट दें तथा गीली मिट्टी से कपरोटी करके सुखालें। गोला कहीं फटे तो और कीचड़ लगा दें। गढ़े में पांच सेर उपलों की आग दें। इसी प्रकार तीन चार बार आग दें तो रौप्य भस्म बन जायेगी। पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा १ रत्ती मक्खन मलाई वा मुनक्का में सेवन करायें। कुछ दिन के सेवन से स्वप्नदोष, प्रमेह, नपुंसकता और हृदय दुर्बलता दूर होगी। पुंस्त्व शक्ति बढ़ेगी।

कृष्णाभ्रक भस्म

उत्तम प्रकार का कृष्ण अभ्रक लेकर इसे शुद्ध करके कृष्णाभ्रक विधिपूर्वक बना लें तथा अभ्रक के चूर्ण को कुठाली में रखकर दहकते कोयलों की आग में रखें। जब अभ्रक अग्नि में लाल हो जाये तो इसे शिरस के पत्तों के रस में डाल दें। फिर बार-बार यह क्रिया करें, शिरस का रस बदलते जायें। बार-बार गर्म करके

शिरस के रस में बुझाने से अभ्रक जलकर हल्का तथा खस्ता होकर भस्म हो जाएगा। जब अभ्रक में चमक न रहे इसे पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—आधा रत्ती से १ रत्ती तक शहद, मक्खन, मलाई आदि उचित अनुपान से देवें तो यथोचित लाभ करती है।

यौवन की शक्ति के लिए अभ्रक भस्म १ रत्ती, त्रिकुटा १ रत्ती [[बारीक पीसा हुआ], मधु ३ माशे में मिलाकर प्रातः सायं चटायें। इसके एक मास के सेवन से पुंस्त्व शक्ति बढ़ती है। खोये हुए यौवन की पुनः प्राप्ति होगी।

यौवन के लिए शिरस सत्त्व

योग—शिरस के पंचांग को जोकुट करके आठ गुणा जल में सायंकाल भिगो दें। प्रातःकाल कलीदार पात्र में वा साफ कढ़ाई में पकायें, जब आधा जल जलकर शेष रह जायें तो उतारकर कुछ ठण्डी होने पर खूब मलकर छान लें, फिर इस छाने हुए क्वाथ के जल को मन्दान्नि की आंच पर धीरे-धीरे पकायें, जब पककर गाढ़ा सा सार रह जाये तो इसकी १-२ रत्ती की गोली बनायें तथा छाया में सुखाकर शीशी में सुरक्षित रखें। मात्रा १ गोली से चार गोली तक गोदुग्ध वा ताजे जल के साथ देवें। यह पुंस्त्व शक्ति बढ़ाती है, स्वप्नदोष, प्रमेहादि रोगों को दूर भगाती है। यह यौवन के लिये सस्ता तथा बहुत उपयोगी रसायन है। इसके अतिरिक्त कण्ठमाला, विष, कुष्ठ तथा नेत्र रोगों के लिये अत्यन्त लाभप्रद है।

वैसे तो घातुपुष्टि के लिये शिरस का पञ्चांग ही लाभप्रद है किन्तु शिरस के फूल वीर्य को गाढ़ा करने तथा वीर्य के स्तम्भन के लिये दिये जाते हैं। मात्रा इनकी ३ माशे सामान्यरूप में है। इसकी छाल का चूर्ण मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक घी के साथ देने से घातु को पुष्ट करता है तथा कामोद्दीपक है। डाक्टर देसाई के मत

शिरस में पौष्टिक वाजीकरण, ग्राही और विषनाशक गुण हैं। शिरस की छाल की मात्रा १ माशा और इसके बीजों की मात्रा साधारण रूप में ४ माशे तक होती है। देश काल रोगी की शक्ति को देखकर घटाई बढ़ाई भी जा सकती है।

आंखों के रोगों पर

१—शिरिष के पत्तों का रस आंखों में डालने से रतौंधी (रात को न दीखने का) रोग कुछ दिन में दूर हो जाता है।

२—नेत्र पीड़ा-शिरस के पत्तों का रस अंजन करने से नेत्र पीड़ा हट जाती है।

३—रतौंधी रोग में शिरस के पत्तों का काढ़ा पिलाने से और पत्तों का स्वरस आंख में डालने से लाभ होता है।

४—शिरस के बीज २ तोले खूब बारीक पीसकर गेहूं के आटे में मिलाकर इसकी रोटी बनाकर खायें। इस प्रकार तीन दिन तक इस प्रकार की रोटी खाने से रतौंधी (रात को न दीखने का) रोग समूल नष्ट हो जाता है।

फोला जाला

१—शिरस के बीजों की गिरी ५ तोले, खिरनी के बीजों की गिरी ५ तोले दोनों को खूब बारीक पीस कपड़छान करके सुरमे के समान बारीक पीस डालें और शिरस के पत्तों के रस में खरल करके गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर सुरक्षित रखें। इन गोलियों को लड़की वाली माता के दूध में घिसकर आंखों में लगाने से आंखों की खाली, फूला तथा नया जाला दूर होते हैं। माता का दूध न मिले तो गाय के दूध व गुलाब जल में घिसकर प्रयोग करें।

२—अनुपम अंजन-शिरस के बीज ६ तोले, कलमीशोरा ६ तोले, अम्बा हल्दी ६ तोले, मूँज की राख ६ तोले, काला सुरमा ६ तोले, समुद्र भाग ६ तोले, नौशादर ६ तोले, फिटकड़ी भुनी हुई ६

तोले, लौंग ६ तोले, पीपल बड़ा ३ तोले, मिर्च काली ३ तोले, नीला थोथा भुना हुआ ३ तोले सब खूब पीसकर सुर्मा बनालें । प्रतिदिन सोते समय आंखों में एक वा दो सलाई डालें । इसके प्रयोग से नेत्र सभी प्रकार के रोगों से सुरक्षित रहते हैं और नेत्रज्योति वृद्धावस्था तक नहीं घटती ।

बढ़िया सुर्मा

३—सुर्मा काला ५ तोला, काली मिर्च १६ तोले, शिरस के बीज ६ माशे, नोल के बीज ६ माशे, शीतल चीनी ६ माशे, रसांत ६ माशे, चाकसू ६ माशे, यशद भस्म ६ माशे, पारा शुद्ध ६ माशे, शीसा ६ माशे, फिटकड़ी सफेद भुनी हुई २ माशे, त्रिफला २ माशे; कपूर २ माशे, कलमी शोरा ४ माशे, हल्दी ४ माशे, अजवायन देशी ६ माशे, दाना इलायची छोटी ६ माशे, मोती अनर्बिधे ६ माशे, अफीम ६ माशे, ममीरा चीनी ४ माशे, संग बसरी ६ माशे, ताम्र भस्म ३ माशे, तुलसी के पत्तों का रस २ तोले, अर्क गुलाब बढ़िया ४० तोले । प्रथम शीशे को पिघला कर इसमें पारा मिला दें । रसांत और अफीम को अर्क गुलाब में घोलकर सब वस्तुओं को कपड़छान करके खरल में डालकर गुलाब के अर्क तथा तुलसी के पत्तों का रस डालकर खूब खरल करें, जब सूख जाए तो शीशी में रखें । सुर्मे समान पिसा हुआ हो । फिर इसका प्रतिदिन रात्री में प्रयोग करें । इसके सेवन से सभी नेत्र रोग दूर होते हैं । नेत्रों की निर्बलता दूर होती है तथा ज्योति बढ़ती है । यह सुर्मा बहुत ही अच्छा है । लाभ उठायें ।

४—निर्घनों का सुर्मा—काला सुर्मा १० तोले, फिटकड़ी भुनी हुई १ तोला, यशद भस्म २ तोले, भस्म मोतिया सीप १ तोला, सफेद मिर्च १ माशा, शीतल चीनी ६ माशे, सबको रगड़ पीसकर शिरस के पत्तों के रस को छानकर निरन्तर सात दिन तक खरल

करें। अत्यन्त लाभदायक योग है। इसका प्रयोग करने से नेत्रों के सभी रोग तथा निर्बलता दूर होती है। कोई रोग वृद्धावस्था तक नहीं फटकता अतः इससे अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

५ - सुर्मा काले की डली १० तोले को लेकर शिरस के वृक्ष में छेद करके भर दें और ४० दिन तक रखकर निकालें। हल्दी की गांठें ५ तोले लेकर इन्द्रायण के हरे फलों (गडूबों) में भर दें और चालीस दिन तक पड़ा रहने दें। तत्पश्चात् इन्हें निकाल कर चालीस दिन तक निम्बुवों में भर दें। फिर निकालकर सुरक्षित रखें। यह हल्दी ममीरे से भी बढ़कर लाभप्रद है। ऊपर वाला सुर्मा १० तोले निकाल कर पोस लें। हल्दी १ तोला, मोती अनन्विधे ६ माशे, सोने के वर्क ६ माशे, वर्क चान्दी ३ माशे, अफीम ३ माशे, सब इकट्ठा पीसकर खट्टे अनार के रस में इक्कीस दिन खरल करें तथा सुरक्षित रखें। इसके प्रयोग से सभी नेत्र रोग दूर भागते हैं। चश्मा छूट जाता है। नेत्र ज्योति खूब तेज हो जाती है। नेत्र रोगों के लिये अनेक प्रकार के सैकड़ों योग शिरस के द्वारा बनाये जा सकते हैं। शिरीष के पञ्चांग ही चक्षुओं के लिये अमृत समान हैं।

भारत का तो बच्चा-बच्चा जानता है कि काला शिरस आंखों के रोगों की एकमात्र प्रसिद्ध औषधि है। अपने-अपने सभी वैद्यों के अनुभव हैं। कोई फूलों से, कोई फलों (बीजों) से, कोई त्वक् (छाल) से तथा कोई मूल से और कोई पत्तों के प्रयोग से नेत्र रोगों की चिकित्सा करता है। पशुचिकित्सक पशुओं के नेत्ररोगों की शिरस से चिकित्सा करते हैं। आबाल वृद्ध वनिता सभी भारत-वासी शिरस को आंखों के रोगों की अद्वितीय औषध मानते हैं। शिरस के बीजों का प्रयोग तो प्रायः छोटे मोटे सभी वैद्य चक्षु रोगों पर करते हैं। यह वृक्ष नेत्रों के लिए वरदान रूप में भगवान् ने प्राणियों के प्रयोग के लिए प्रदान किया है। उस दाता की दिव्य

देन के गीत कहां तक गायें । कुछ अन्य अनुभूत योग अपने तथा अन्य वैद्यों के नेत्र रोगों पर नीचे लिखे जाते हैं ।

नेत्र रोगों पर काजल

शिरस के हरे पत्ते लेकर कूट लें और उन पत्तों का गोला बनाकर कपरोटी कर लें तथा सुखाकर गर्म राख (भूबल) वा थोड़ी अग्नि में रख दें, वह जब गर्म हो जाये तो ठण्डा करके मिट्टी को दूर करके पत्तों का रस निचोड़ लें और उस स्वरस में एक पुरानी रुई की एक तोले की बत्ती बनाकर भिगो दें । इस प्रकार प्रतिदिन भिगोवें तथा छाया में शुष्क करें, फिर दूसरे दिन इसी प्रकार निकाले हुए शिरस के पत्तों में भिगोवें, इस प्रकार सात बार भिगोवें तथा सात बार ही सुखावें, फिर सर्वथा सूखने पर एक पाव गोघृत में भिगो दें । तीन दिन के पश्चात् दीपक में इस बत्ती को जलायें और काजल उपाड़ लें । दीपक निर्वात स्थान पर जलायें, जब सारा एक पाव घृत जल जाये तो सारे काजल को भाड़ कर सुरक्षित रखें तथा सोते समय एक वा दो सलाई आंखों में डालें । इसके प्रयोग से आंख की लाली (सुर्खी) कण्ठ खुजली को यह काजल सर्वथा तथा शीघ्र दूर करता है । यह काजल एक-दो दिन शिरस के स्वरस में भिगो कर भी बनाया जा सकता है किन्तु वह थोड़ा लाभ करेगा । सात बार भिगोने से अधिकाधिक लाभकारी होता है । पत्तों का रस कूटकर तथा कुछ जल डालकर भी निकाला जा सकता है किन्तु स्वरस के समान गुणकारी नहीं होता । इसी प्रकार शिरस के पत्तों वा पञ्चांग के क्वाथ के जल में बत्ती भिगो सुखाकर भी घृत वा तैल में बत्ती जलाकर काजल बनाया जा सकता है किन्तु वह स्वरस के समान लाभप्रद नहीं, घृतः सुड़ता बनाकर स्वरस पत्तों से अच्छी प्रकार सुगमता से निकलता है तथा अधिक गुणकारी है । घृत के स्थान पर सरसों वा चमेली का

तैल भी काजल के लिए जलाते हैं किन्तु वे गोघृत के सन्मुख गुणों में पासिंग भी नहीं। गोघृत अमृत है तैल आखिर तैल ही है। उपरिलिखित गोघृत के काजल से, जो आंखों की लाली वा सुखी किसी भी औषध से दूर नहीं होती वह इस काजल से काफूर के समान भाग जाती है। लाली आंख दुखने के कारण हो चाहे किसी और कारण से हो वह इस काजल से समूल नष्ट हो जाती है। अन्य रोग भी इससे (चक्षु सम्बन्धी) दूर हो जाते हैं।

गोलियां

काले शिरस के बीज एक छटांक कूटकर कपड़छान करलें तथा बारीक पीसकर सुर्मासा बना डालें और इसमें शिरस के पत्तों का रस डालकर खूब खरल करें तीन चार दिन तक खरल करते रहें, रस भी डालते रहें, फिर गाढ़ा होने पर इसकी गोलियां बनायें। वक्तिका (बत्तियां) भी बना सकते हैं, छाया में सुखा लें तथा सुरक्षित रखें। इन गोली वा बत्तियों को लड़की वाली माता के दूध में वा गाय वा बकरी के दूध में घिसकर लगायें। इसके कुछ दिन प्रयोग करने से नेत्रों की लाली, फोला, खुजली आदि शोग दूर होते हैं तथा नेत्रज्योति बढ़ती है।

सुर्मा

बढ़िया मिश्री को बारीक पीसलें। सुर्मे के समान होने पर शिरस के पत्तों का रस वा त्वक् का रस डालकर खरल करें, इस प्रकार दो तीन दिन खरल करें फिर शुष्क होने पर सुर्मे के समान इस को सोते समय प्रयोग करें। नेत्र की खुजली लाली तथा नया फोला भी इस प्रयोग से दूर होता है। मिश्री के स्थान पर श्वेत रंग के पतासे भी कुछ वेद्य डालते हैं वे भी ठीक हैं।

सेक

रूई का फोहा शिरस के पत्तों के रस में भिगोकर गोघृत में

पकाकर सोते समय आँखों को इससे सेकें तथा सुहाता सुहाता कुछ गर्म गर्म आँखों पर ही बांध लेवें इससे आँखों की लाली तथा खुजली दूर होगी। दुखती हुई आँखें भी अच्छी हो जायेंगी।

शिरस के बीजों वाली रोटी जो पीछे लिख चुके हैं, पांच सात बार खिलाने से लालिमा तथा रतौंधी दूर होते हैं।

शिरस के पत्तों का रस भी इन दिनों आँखों में दोनों समय डालते रहें तो शीघ्र लाभ होगा।

योग—शिरस की नर्म नर्म हरी छाल एक तोला रोगी को प्रतिदिन खिलायें तो पुराना रोग भी दूर होगा। औषध खिलाने तथा आँखों में डालने, यह बाह्य आभ्यन्तर चिकित्सायें एक साथ लगातार करने से शीघ्र तथा अधिक लाभ होगा। आँखों के सभी प्रकार के रोग दूर करने के लिए इन सबका अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

फोला जाला

योग—१. काले सिरस के बीज एक तोला, कलमी शोरा एक तोला दोनों को कूटकर कपड़छान कर लें। सुर्मे के समान बारीक करके तीन चार दिन तक सिरस के पत्तों के रस में खरल करके सुखाकर सुरमा बना लें। रात्रि में सोते समय एक दो सलाई फोले, जाले वाले रोगी की आँख में डालें, कुछ दिन के प्रयोग से फोला, जाला साफ हो जायेगा।

चेचक का फोला

२. हाथी के नाखून का एक भाग लेकर सिरस के पत्तों के रस में किसी पात्र में भिगो दें। प्रतिदिन रस बदल दें। पुराना रस फेंक दें नया रस उसमें डाल दें। सात दिन इस प्रकार करें। फिर शुद्ध जल से आठवें दिन इसको धोकर रखलें। इस पर कुछ

जल की बून्दें डाल कर शुद्ध साफ पत्थर पर रगड़ें वा घिसें । जब गाढ़ा सा हो जाये तो सलाई से आंखों में लगायें । इस प्रकार दिन में दो तीन बार लगायें । कुछ ही दिनों के प्रयोग से बड़े से बड़ा फोला कट जायेगा और आंख में ज्योति आ जायेगी । जिस चेचक के फोले के विषय में यह प्रसिद्ध है कि वह कटता नहीं उसे भी यह औषध छोड़ती नहीं । श्रद्धा से निरन्तर प्रयोग करने की बात है ।

३. बारहसींगे का सींग शिरस के पत्तों के रस में घिसकर बारहसींगे के सींग का पिसा हुवा चूर्ण पाँच तोले नींबू के रस में खरल करके इसको सुखा लें तथा सुर्मे के समान इसका प्रयोग करें । कुछ दिन के प्रयोग से फोला, जाला, घुन्घ सब दूर हो जाते हैं ।

४. जंगली कबूतर की बीट पाँच तोला बारीक पीसकर नींबू के रस में सात दिन तांबे के पात्र में भिगोकर छाया में सुखा लें । फिर तीन दिन तक शिरस के पत्तों के रस में भावना देकर सुखा रगड़ कर बारीक सुर्मा बना लें । इसके प्रयोग से भी शीघ्र फोला, जाला, घुन्घ सब दूर होते हैं ।

५. शिरस की हरी नरम-नरम छाल आध सेर, सोंठ बढ़िया बिना रेशे की दो तोले इन दोनों को मिलाकर खूब कूटें । गुलाब जल के छींटे देते जायें । जो पानी इसमें निकले कपड़छान कर कीशी में सुरक्षित रखें । इस जल की दो बून्दें ड्रोपर से आंख में डालें । औषध आंख में लगती है किन्तु जाला, रतौबी, लाली, फोला सब साफ करने के लिए अच्छी औषध है । जिस संन्यासी का यह योग है उसका कथन है इससे सर्वथा अन्धे रोगी भी ठीक हो जाते हैं । इसकी बहुत अधिक प्रशंसा की है । प्रयोग करें और लाभ उठावें ।

सुर्मा

योगः—सुहागा भुना हुआ, कल्मीशोरा, नोशादर, काला

सुर्मा प्रत्येक पाँच-पाँच तोला । सबको बारीक पीसकर शिरस के पत्तों के रस में खरल करें । पुनः टिकिया बनाकर एक हांडी में कपरोटी करके गजपुट की आग में फूंक दें । निकालकर बारीक पीसकर शिरस के पत्तों के रस की दो तीन भावना देकर दो तीन दिन रगड़ कर सुर्मे के समान पीस लें । रात्रि को सोते समय एक सलाई सुर्मा डालें । इस सुर्मे की एक सलाई तीसरे दिन डालना अच्छा रहता है । इसके कुछ दिन के प्रयोग से धुन्ध फोला जाला और आंखों की लाली समूल नष्ट हो जाती है । कुछ वेंच काले सुर्मे के स्थान पर सफेद सुर्मे का प्रयोग करते हैं तथा इसका निर्माण भी दूसरे प्रकार से करते हैं ।

दूसरी विधि:—ऊपर की सभी वस्तुओं को लेकर शिरस की एक गज लम्बी लकड़ी लेवें जो पर्याप्त मोटी हो । उसमें गहरा छिद्र करके उसमें दवाई भर दें और शिरस की डाट लगाकर एक शिरा भूमि पर तथा दूसरा सिरा एक खोदे हुये गढ़े में धर दें । उस गढ़े में एक चीनी का प्याला धर दें और दूसरे शिरे पर उपले लगाकर आग दे दें । दवाओं का गर्मी से अर्क बनकर प्याले में चला जायेगा । सुर्मा जो सफेद होगा वह डली की डली मिलेगी । सुर्मे को खरल में डालकर रगड़ लें । बारीक पीसने पर उसमें प्याले वाला अर्क डालते जायें, जब रगड़ते-रगड़ते सब रस सूख जाये तो सुर्मा तैयार है । यह अनुपम सुर्मा बनेगा । फोला, जाला, धुन्ध, लाली इसके प्रयोग से सभी नष्ट होंगे । इसका श्रद्धा से निरन्तर प्रयोग करने से बहुत लाभ होता है ।

नेत्र रोगों पर सत्त्ववाला सुर्मा

योग:— नमक शीशा १ पाव, नोशादर, फिटकड़ी, कल्मी शोरा, लोटा सब्जी प्रत्येक पाव भर । सबको कूटकर एक कोरी

सुद्ध मिट्टी की हांडी में भर दें और इसमें दो सेर सिरस के पत्तों का रस डालकर कपरोटी करके सुखाकर इसे गजपुट की आग में फूंक दें और खोलकर श्वेत औषध को बारीक पीसकर सुर्मे के समान प्रयोग करें, इसे शीशी में बन्द रखें। प्रातः सायं सलाई के सिरे पर एक चावल भर लगाकर आंखों में डालें। कुछ ही दिन के प्रयोग से जाला, फोला, धुन्ध सब कट जायेंगे। यह तिल्ली, यकृत शोथ की भी औषध है।

सत्त्व बनाने की दूसरी विधि

ऊपर वाली दवायें मिट्टी की सर्वथा कोरी हांडी में, जिसमें पहले जल भी न लगा हो, डालकर बन्द कर दें। तीन दिन पीछे श्वेत रंग का सत्त्व हांडी में से फूटकर निकलने लगेगा। जितना सत्त्व वा जौहर प्रतिदिन निकले, सुरचकर शीशी में डालकर बंद कर दें नहीं तो सत्त्व का जल बन जायेगा। शीशी में डाल सदैव बन्द रखें तथा थोड़ासा चावल भर आंख में डालें तो धुन्ध, जाला फोला सभी नष्ट होते हैं।

पोलिया [पाण्डुरोग]

योग—१. सिरस को छाल छः मासे को कूटकर मिट्टी के कोरे पात्र में आध पाव जल में भिगो दें। प्रातःकाल मल छान कर मिश्री मिलाकर पिला दें। कुछ दिन में ही रोग समूल नष्ट हो जायेगा।

२. उपरोक्त छाल के जल के साथ एक रत्ती मण्डूर भस्म, दो रत्ती शंख भस्म मिलाकर सेवन करें। शीतकाल में सिरस की छाल के छाने हुए जल को थोड़ा गर्म करके सेवन करें।

३. शिरस की छाल को गोमूत्र एक छटांक वा आध पाव में मिट्टी के पात्र में भिगो कर प्रयोग करें तो और भी शीघ्र लाभ

होगा। इसका प्रयोग प्रातः सायं न्यून से न्यून दो बार अवश्य करें। प्रातःकाल की भिगोई हुई छाल का जल सायंकाल तथा सायंकाल भिगोया हुआ जल प्रातःकाल पीवें।

मूत्रकृच्छ्र

१. योग—शिरस के बीजों का तेल दूध की लस्सी में डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

इसके पत्तों की नुगदी को पानी में छानकर मिश्री मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है।

२—शिरस के फूल ६ मासे लेकर उनमें कुछ मिश्री मिलाकर ठंडाई की भांति घोट छानकर रोगी को पिलाने से मूत्रकृच्छ्र रोग नष्ट हो जाता है।

३—शिरस के बीजों के तेल की मात्रा ३ से १० बूंद तक है बकरी के दूध की लस्सी में डालकर दिन में तीन-चार बार पिलाने से मूत्रकृच्छ्र शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। यहाँ तक सुजाक की भयङ्कर बीमारी भी कुछ दिन के सेवन से समूल नष्ट हो जाती है।

उदर रोगों पर शिरस

यकृत का सूजन—जब ज्वरादि के कारण किसी रोगी के यकृत में दोष आ जाता है तो जिगर में सूजन आ जाता है, रक्त थोड़ा बनता है वा सर्वथा बनना बन्द हो जाता है। आमाशय में निर्बलता होकर पाचनशक्ति जवाब दे देती है। मुख पीला पड़ जाता है। भूख भी बन्द हो जाती है। हल्का सा ज्वर भी रहने लगता है।

योग—१—शिरस की आन्तरिक छाल वा जड़ की छाल लेकर जो कुट करलें इसमें से ६ मासे लेकर $\frac{1}{2}$ सेर जल में पकायें जब सारा जल जल जाये केवल $\frac{1}{2}$ पाव शेष रह जाये तो इसमें थोड़ी

मिश्री वा शहद मिलाकर छानलें इसको पिला दें यदि इसके साथ १ रत्ती मण्डूर भस्म २ रत्ती शंख भस्म मिलाकर लेवें तो और भी सोने पर सुहागा का कार्य होगा। इससे यकृत तथा आमाशय की सृजन दूर होकर रोगी कुछ ही दिनों में भला चंगा हो जायेगा।

२—सिरस के पत्ते छाल तथा फूल फली आदि जो भी पंचांग में मिलें उनको छाया में शुष्क कर जलाकर राख करलें तथा इस भस्म को आठ गुणों जल में भिगोलें तथा किसी मिट्टी वा कली के पात्र में रखदें, दिन में दो चार बार इस राख को जल में घोळ दें। तीन दिन पीछे जल को ऊपर से निथार छानकर आग पर पकायें। जब सब जल जल जाये तब नीचे सफेद रंग का क्षार बचेगा उसे शीशी में सुरक्षित रखें। यह यकृत की अच्छी औषध है। मात्रा १ मासे से २ मासे तक अर्क सोंफ वा गोमूत्र से देवें। यकृत के शोथ दुर्बलादि सब रोग दूर होंगे। इसमें प्रत्येक मात्रा में १ रत्ती मण्डूर तथा दो रत्ती शंख और मिलालें तो बहुत अधिक तथा शीघ्र लाभ होगा।

तिल्ली

तिल्ली प्लीहा के शोथ को भी ऊपर लिखा क्षार सिरस मण्डूर तथा शंख भस्म के साथ प्रयोग करने से बढ़ी हुई तिल्ली ठीक हो जाती है। गोमूत्र के साथ प्रयोग करने से इसमें अधिक लाभ होता है। तिल्ली जिगर के रोगी को कोष्ठबद्धता नहीं रहनी चाहिए।

प्लेग

प्लेग बहुत ही भयङ्कर रोग है। जब फैलता है बसे हुये ग्राम और नगरों को उजाड़ कर रख देता है। घर के घर खाली हो जाते हैं, छूत का रोग है, तीन बार अपने जीवन में प्लेग के आक्रमण लेखक ने देखे हैं। लोगों का यह विश्वास है कि प्लेग की कोई

औषध ही नहीं है। प्लेग की बहुत अनुभूत तथा अनेक औषध हैं। नीचे शिरस की औषध लिखी जाती है। भगवान् ने शिरस में विष नाशक गुण भरे हैं, प्लेग के विष को दूर करने की अपूर्व शक्ति शिरस में प्रचुर मात्रा में विद्यमान है।

१—शिरस का अर्क रोगियों को मात्रा ५ तोले दिन में चार पांच बार पिलायें और शिरस के पत्तों का भुड़ता वा पत्तों की घुटी हुई नुगदी गर्म करके प्लेग के फोड़ों वा गिलटियों पर बांधे। अर्क खींचने की विधि यह है—शिरस के फूल पत्ते वक्कल १ सेर लेकर जो कुट करलें तथा १६ सेर जल में भिगो दें और प्रातःकाल भबके से अर्क खींचलें। जो भवका उपलब्ध न हो तथा अर्क भी न मिले तो शिरस के फूल पत्तों तथा छाल का क्वाथ बनालें और उसे छानकर मात्रा २ तोले लेकर दिन में तीन-चार बार पिलायें। इससे भी अच्छा लाभ होगा।

२. शिरीष के सत्त्व की मात्रा १ माशा गम जल के साथ कई बार लेवें। पत्तों को रगड़कर तीन-तीन मासे दिन में कई बार देवें वही लाभ होगा।

३. शिरीष अरिष्ट दिन में दो-तीन बार जल मिलाकर दो तोले की मात्रा में रोगी को पिलायें इससे भी रोग शीघ्र ठीक हो जायेगा। शिरस के क्वाथ से सिकाई, शिरस के पत्तों का भुड़ता दिन में कई बार बदलकर बांधें इससे प्लेग की गांठें शीघ्र पककर फूट जायेंगी फिर उस पर कोई जख्म भरने की मरहम लगायें।

मरहम :—१. शिरस के पत्तों का रस १ छटांक, शिरस के पत्तों का पानी १ छटांक, राल सफेद १ छटांक, कत्था सफेद १ छटांक, नीलाथोथा सवा तोला, फिटकड़ी सफेद सवा तोला। तिल के तेल और पत्तों के रस को चीनी के प्याले में मिलाकर अंगुली से खूब मिलाकर गाढ़ा करलें और कत्थादि चारों वस्तुओं को कूट-

छानकर कपड़छान करलें। सबको मिलाकर दो-चार मिनट आग पर रखलें। यह बहुत बढ़िया मरहम है इसके आगे किसी मरहम की आवश्यकता नहीं। इसको फोड़े पर लगाकर अग्नि पर सेककर फोड़े पर वा जखम पर चिपका दें। यह प्लेग के फोड़ों को पकाकर फोड़ देगी तथा जखम को भी भर देगी। सैंधे-नमक की पोटली से सेकने से गाँठें वा फोड़े शीघ्र पकते हैं तथा जखम भी इससे शीघ्र भरते हैं। समय पर प्रयोग करें तथा लाभ उठायें। अन्य फोड़ों के लिए भी अच्छी मरहम है।

१. घाव पर:—प्लेग के फोड़े वा गिल्टी जब पककर फूट जायें तो ऊपर लिखी मरहम का प्रयोग करें।

२. शिरस की छाल छाया में सुखाकर कूटकर इसे कपड़छान करलें। इसे जखमों पर छिड़कें। इससे प्लेग के फोड़ों के तथा सभी प्रकार के जखम शीघ्र सूखकर भर जाते हैं।

३. जखमों को साफ करने के लिये सिरस के पत्तों का क्वाथ बहुत ही लाभ करता है।

४. कछुवे की खोपड़ी को सिरस के पत्तों में रखकर भस्म करलें, तो इसकी राख जखमों पर डालने से तीन-चार दिन में भयंकर जखम भी भर जाते हैं।

५. ५ तोले सिरस के हरे पत्ते, ५ तोले गाय के घृत में जलायें जब पत्ते काले हो जायें तो उतारकर घोटकर मरहम बनाकर जखमों पर लगायें।

६. शिरस के बीज, निर्विषी, गिलोय, हल्दी, केसर सबको समभाग लेकर पानी में पीसकर गर्म करके गिल्टी पर लेप करने से लाभ होता है।

७. मनुष्य के सिर की खोपड़ी की हड्डी शिरस के पत्तों के पानी में पीसकर जखम पर लेप करने से सख्त से सख्त जखम जो

सैंकड़ों औषधों से न भरा हो वह इससे भर जाता है। सभी प्रकार के जखमों की औषध है। नासूर भी अच्छा हो जाता है।

८. शिरस की जड़ की छाल गीली हो तो जल के साथ पीसकर चोट तथा जखमों पर लेप करने से शीघ्र चोट तथा जखम और फोड़े ठीक हो जाते हैं। गीली जड़ की छाल सदैव उपलब्ध नहीं होती। अतः छाया में सुखाकर बारीक पीसकर रखें तथा समय पड़ने पर जल में मिलाकर लेप करें तो चोट वा जखम शीघ्र ठीक होते हैं। विषेले फोड़ों तथा सर्प और बिच्छू पर सिरके के पंचांग का लेप अच्छा कार्य करता है, पीड़ा तथा सूजन को भी दूर करके विष को हरता है।

हृदय रोग पर

सीप, मोती, प्रवाल, अकीक आदि का प्रयोग हृदय रोगों पर वैद्य लोग करते हैं। इन सब की भस्में शिरस के रस में, नुगदी में बनाई जाती हैं तथा उनका प्रयोग हृदय की दुर्बलता आदि को दूर करने के लिये किया जाता है।

१. मुक्ताशुक्ति अर्थात् मोतिया सीप को दो चार घण्टे गोमूत्र में उबाल करके शुद्ध कर लें। १ सेर शिरस के पत्तों को कूटकर नुगदी बनाये तथा पांच तोले मोतिया सीप के टुकड़े सिरस के पत्तों की नुगदी में रख कर छोटी हांडी में कपरोटी करें, सुखा कर १० सेर उपलों की आग में फूंक दें। एक बार की आग में ही अच्छी भस्म बन जायेगी इसको बारीक पीस कर सुरक्षित रखें। मात्रा १ रत्ती से ४ रत्ती तक प्रातः सायं खिलाने से हृदय की घड़कन निर्बलता सब दूर होते हैं।

अकीक भस्म

उत्तम अकीक जो बिना दाग का हो ५ तोला लें और शिरस के पत्तों को आध सेर नुगदी में रख कर मिट्टी की छोटी

हांडी में कपरोटी करके सुखा लें और गढ़ा खोदकर गजपुट की आग दो मन उपलों की दें। एक ही आंच में श्वेत भस्म होगी किन्तु इसे बढ़िया तथा नरम बनाने के लिये शिरस के पत्तों के रस में खरल करके टिकिया बनाकर फिर से शिरस के पत्तों की नुगदी न्यून से न्यून तीन बार फूँके। अति उत्तम भस्म तैयार होगी। एक पूर्णिमा की रात्रि में इसे लाल कमल के रस वा क्वाथ में रात भर खरल कर लेवें फिर सोने पर सुहागे का कार्य होगा। गुलाब जल की भी भावना दी जा सकती है किन्तु लाल कमल में अधिक गुण हैं। मात्रा १ रत्ती शहद वा गाय के मक्खन वा सेब वा आंवले के मुरब्बे में देवें। यह हृदय की घकड़न निर्बलता को दूर करने में बहुत उत्तम औषध है।

प्रवाल वा मुक्ता भस्म

इसी प्रकार प्रवाल मूँगे की शाखाओं को शिरस के पत्तों के रस में खरल करके और शिरस के पत्तों की नुगदी में रखकर गजपुट की भावना भी चन्द्रमा की चांदनी में देवें। मोती की भस्म भी इसी प्रकार बनेगी उसे आग में भावना देने की आवश्यकता नहीं। गाय के दूध वा शिरस के पत्तों के रस में दो घण्टे उबालने से मोतियों की भस्म तैयार हो जाती है।

प्रवाल पिष्टी तथा मोती की पिष्टी चन्द्रपुटी कमल के रस तथा शिरस के पत्तों के रस से भावना दी हुई भस्म की अपेक्षा अच्छी सिद्ध हुई है। सैकड़ों रोगियों पर अनुभूत है।

प्रवाल पिष्टी वा भस्म की मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक शहद, सेब का मुरब्बा आदि है। प्रातः सायं दो बार देवें। मुक्ता पिष्टी वा मोतियों की भस्म की मात्रा आधा रत्ती है। अनुपात मधु सेब का मुरब्बादि है। प्रवाल पिष्टी तथा मुक्ता पिष्टी हृदय की निर्बलता घड़कन आदि सभी रोगों के लिये सर्वोत्तम औषध

हैं। भस्मों की अपेक्षा पिष्टी अधिक लाभदायक सिद्ध हुई हैं। जादू के समान कार्य करती हैं। इन्जैकशन का प्रभाव भी इसके तुल्य नहीं होता। हृदय रोगों की एकमात्र औषध है।

फेफड़े के खांसी आदि पर

योगः—सिरस के बीज १० तोले कूटकर आधा सेर जल में उबालें। जब जलकर १ पाव रह जाये तो उसमें १० तोला शुद्ध मधु मिला कर पकायें। सारा जल जलकर गाढ़ा हो जाये तो यह शिरस का अवलेह बन गया।

मात्राः—२ मासे दिन में दो तीन बार चाटें। यह खांसी की अच्छी औषध है, इसमें ४ रत्ती त्रिकुटे का चूर्ण मिलाकर सेवन करें तो और भी अधिक लाभ होगा।

वायु रोगों पर

१. शिरीष तैलः—शिरस के पुष्प, बीज, पत्ते, छाल और जड़ सबको जो कुट करके आठ गुणो जल में २४ घण्टे भिगो दें। फिर किसी कलीदार पात्र में डालकर मन्द मन्द अग्नि पर पकायें जब $\frac{3}{4}$ भाग जल जल जाये और $\frac{1}{4}$ शेष रह जाये तो उसको मल कर छान लें [जितना शेष रह जाये तो उसको मलकर छान लें] जितना जल हो उतना मीठा तैल डालकर पकायें। आग मन्दी ही रहे। जब सब जल जल जाये केवल तैल ही बच जाये तो इस तैल को सुरक्षित रखें। शिरस के पंचांग का तैल तैयार है। इसकी मालिश से अर्द्धांग, अर्द्धित वायु लकवा आमवात गठिया जोड़ों का दर्द सब दूर हो जाते हैं। खुजली दाद को भी यह दूर करता है। यह वायुरोगनाशक तैल है। किन्तु सूजन विसर्प को दूर करता है।

२. अर्द्धांग वा अर्द्धित वायु लगने पर—शिरस की छाल का चूर्ण मात्रा एक माशा खाकर ५ तोले गोघृत गर्म करके रोगी को

पिलायें वा चटायें। इस प्रकार दीर्घकाल तक सेवन करने से लाभ होता है। रोगी कम खाये वा भूखा रहे। भूख लगने पर शहद जल में पकाकर पिलायें। शिरस के तैल का मर्दन करें। वायु से बचायें तो लाभ होगा।

३- शिरस के पत्ते, संभालू के पत्ते और सहजने के पत्ते इन सबको जल में उबालकर इनका भफारा देने से वात पीड़ा नष्ट होती है।

कर्ण पीड़ा

१. शिरस के बीज एक छटांक कूटकर आध पाव तिल के तल में डालकर जला दें इस में जलाते समय एक पाव गोमूत्र भी डाल दें। जब केवल तैल शेष रह जाये गोमूत्र और बीज जल जायें तो उतार कर इसे ठण्डा करके निथार कर छान लें तथा शीशी में सुरक्षित रखें। समय पड़ने पर कुछ बूंदें इस तैल की थोड़ा गर्म करके कर्ण में डालें। पीड़ा तुरन्त दूर हो जायेगी।

२. शिरस के पत्तों को कूटकर गर्म करके स्वरस निकाल कर कर्ण में डालने से पीड़ा सर्वथा दूर होती है। पत्तों को कूटकर गोला बना लें तथा वस्त्र में बाँधकर उसके ऊपर गारा लपेट कर आग में दे दें। जब वह लाल हो जावे तो निकाल कर ठण्डा कर कीचड़ आदि वस्त्र सहित उतार दें फिर थोड़े थोड़े पत्ते जब गर्म हों उनका रस निचोड़ कर समोष्णावस्था में हो उसकी कुछ बूंदें कान में डालने से पीड़ा तथा बहना ठीक हो जाता है।

३. शिरस के पत्तों तथा आम के पत्तों का रस थोड़ा गर्म करके कान में टपकाने से कर्ण पीड़ा नष्ट होती है।

चक्कर आना

किसी रोगी को चक्कर वा अन्वेष आती हो तो यह मस्तिष्क

की निर्बलता दूर होने से चक्कर आना, अन्धेरी, मृगी आदि रोग सब दूर होते हैं ।

१. शिरस के सत्त्व की गोली एक मासे की प्रातः सायं गो दुग्ध वा मक्खन के साथ प्रयोग करने से उपरोक्त सब रोग दूर होते हैं । भोजन के पीछे भी इन गोलियों को अश्वगन्धारिष्ट के साथ सेवन करने से और अधिक लाभ होगा ।

२. शिरीषारिष्ट का सेवन भी इन चक्करादि मस्तिष्क के रोगों को दूर करता है । जैसे प्रतिश्याय, जुकाम, शिर पीड़ा वा मानसिक दुर्बलता के लिए ये लाभ करता है । लगातार सेवन से बहुत ही लाभ होता ।

जुकाम, प्रतिश्याय मस्तिष्क सम्बन्धी रोग हैं इनकी चिकित्सार्थ भी इसका प्रयोग करते हैं ।

उन्माद (अपस्मार) मृगी

शिरस के बोज और करंजवे के बीजों की गिरी पीसकर आँखों में अञ्जन लगाने से उन्माद (अपस्मार) मृगी पागलपन और आँख रोग दूर होते हैं ।

कब्ज—शिरस के बीज तीन मासे का चूर्ण एक माशा काला नमक तथा तीन मासे काली हरड़ छोटी का चूर्ण गोमूत्र १ छटां के साथ सायंकाल चार बजे प्रतिदिन लेवें । इससे कोष्ठबद्धता, कब्ज, यकृत, तिल्लो के दोष सभी दूर होंगे ।

अशं वा बवासीर

१. बवासीर के मस्सों पर शौचादि से निवृत्त होकर शिरस के बीजों का तैल लगावें । कुछ ही दिनों के तैल लगाने से अशं के मस्से मुरझा कर समाप्त हो जाते हैं ।

२. शिरस के बीजों को बारीक रगड़ कर शिरस के बीजों

के तैल में मिलाकर मस्सों पर लेप करने से बहुत शीघ्र बवासीर का कष्ट दूर होता है ।

कब्ज और बवासीर

बवासीर (अर्श) चाहे खूनी हो अथवा बादी कोष्ठबद्धता (कब्ज) दोनों में ही रहती है । कोष्ठबद्धता (कब्ज) को दूर करने के लिए सिरस के बीजों का एक कल्प है वह निम्न प्रकार से है—

पहले दिन एक बीज श्वेत सिरस का जल के साथ निगल जायें वा चबाकर जल पीलें । दूसरे दिन दो बीज और तीसरे दिन तीन बीज जल से लेवें । इस प्रकार प्रतिदिन एक बीज बढ़ाते जाय यहां तक कि ४० बीज तक पहुँच जाये । इससे कोष्ठबद्धता दूर होगी । साधुओं का चुटकला है ।

खूनी बवासीर

जब रक्त मस्सों से अधिक मात्रा में निकलता हो तो सिरस के बीजों का चूर्ण १ माशा, मिसरी २ माशे मिलाकर ताजे जल के साथ प्रातः सायं देवें तीन चार दिन में रक्त निकलना सर्वथा बन्द हो जाएगा ।

२. शिरस के बीज एक माशा नागकेसर तीन माशे, मिश्री एक तोला, मक्खन गाय का २ तोला मिलाकर प्रातः सायं अर्श के रोगी को देवें । रक्त बहना पीड़ादि सब दूर होंगे । अनुभूत है ।

बिवाई

सिरस की छाल का पिसा हुआ बारीक चूर्ण एक तोला गाय का मक्खन वा घी जल से कांसी की थाली में सौ बार धोया हुआ हो । इनको मिला लें । जहां शरीर पर बिवाई फटी हो हाथों वा पैरों पर वा शरीर के सारे अंगों पर इस औषध को लगायें तथा मालिश करें । इससे फटी हुई बिवाई नष्ट होगी तथा निरन्तर प्रयोग से नई बिवाई फटनी बन्द हो जायेंगी ।

विष विकार

योग—पुराणे शिरीष की अन्तर्छाल, जड़ की छाल, बीज और फूलों को गोमूत्र के साथ दिन में तीन बार खिलाने से सर्व प्रकार के विष विकार दूर होते हैं ।

मिथुन की संक्रान्ति में सात मासे छाल को पीसकर चावलों के घोवन के साथ खिलाने से सर्पादि विषैले जानवरों का विष नहीं चढ़ता । यह औषध तीन दिन खिलानी चाहिये यह कुछ वैद्यों का मत है । वैसे सिरस का पंचांग सर्वविष नाशक है । हमने सैंकड़ों रोगियों पर आजमाया है ।

सर्प विष पर—१. शिरस के पत्तों वा फूलों के रस में सफेद मिर्चों को सप्त भावना दें तथा सर्प काटे रोगी को मात्रा ३ मासे जल के साथ खिलायें और अंजन के रूप में आंख में भी डालें । इससे सर्प विष उतर जाता है ।

२. सिरस की छाल जड़ पत्ते और बीज सबको गाय के मूत्र में पीसकर शरीर पर लेप करने से सर्पदंश का विष तथा सभी प्रकार के विषों का प्रभाव नष्ट हो जाता है । बारम्बार का अनुभूत है ।

सर्पदंश तथा अन्य विषों पर

सिरस के पत्ते, फूल, फली (बीज) छिलका तथा जड़ की छाल सबको समभाग लेकर बारीक कूट पीसकर दो-दो मासे की गोलियां बना लें । समय पड़ने पर ४ से १० गोलियां तक बकरी वा गाय के दूध के साथ घोलकर पिला दें । कुछ घोल में से दंशित स्थान पर लेप कर दें । इस गोली को सुखा पीसकर नसवार दें । इस प्रकार विष दूर होगा ।

२. समय पर सिरस के पंचांग में से जो भी मिल जाये लेकर कूट पीसकर पानी में घोलकर सर्पदंश के रोगी को पिलायें । ५ तोले

तक पञ्चांग कूट पीस जल वा दूध के साथ पिला सकते हैं तथा इसी का लेप दंशित स्थान पर करें। विष भी उतरेगा तथा विष के कारण जो दंश स्थान पर सूजन वा पीड़ा होगी वह भी दूर होगी। इसे हमने बार-बार आजमाया है।

३. शिरीषारिष्ट दो तोले चार तोले तक जल मिलाकर सर्पदंश के रोगी को कई बार पिलायें। सर्पदंश के विष का नाश करने के लिए यह उत्तम औषध है। यही नहीं सर्पदंश क्या कोई भी स्थावर वा जंगम विष हो यह शिरीषारिष्ट सबको दूर करता है।

४. जेठ के मास में पुराने सिरस की काले रंग की छाल ढूँढ़कर उतार लें। उसको कपड़छान कर लें। मात्रा ७ मासे लेकर सांठी के चावलों के धोवन के साथ घोट छानकर पिलायें तो कुछ दिन के पीने से उस व्यक्ति के रक्त वा शरीर में ऐसा प्रभाव हो जायेगा कि वह एक वर्ष तक विषैले जन्तुओं से सुरक्षित रहेगा अर्थात् यदि विषैला सर्प बिच्छू काटेगा तो उसके विष का कोई प्रभाव नहीं होगा। कुछ वैद्यों का मत है कि ऐसे व्यक्ति को काटने वाला सर्प वा बिच्छू ही मर जायेगा।

सर्पदंश की सूजन—१. सिरस के पत्तों वा पञ्चांग को जल में घिसकर लेप करने से सूजन उतर जाती है। और भी किसी प्रकार का सूजन हो वह भी दूर होता है।

२. सिरस वृक्ष की छाल ६ मासे को आधा सेर जल में उबालें जब आध पाव हो रह जाय तो छानकर उसमें दो तोले मिश्री मिलाकर रोगी को पिलायें तो सर्वप्रकार की सूजन दूर होगी। दो चार बार यह क्वाथ अवश्य पिलायें तब लाभ होगा।

३. सिरस की छाल, मूल, पत्ती और बीज इनको गोमूत्र में पीसकर शरीर पर लेप करने से सर्प, बिच्छू के विष तथा अन्य

सभी विष दूर होते हैं। विष के साथ सूजन जलन तथा पीड़ा भी दूर होती है।

सिरस के बीज, अपामार्ग के बीज, सेंधा नमक तीनों समतोल लेकर जल के साथ अत्यन्त बारीक पीस लें और नसवार के रूप में सुंघायें। इससे सर्प विष के कारण आई बेहोशी दूर होती है।

५. सिरस के पत्तों का रस निकालकर इसमें काली मिर्च भिगोकर सुखालें। इस प्रकार सात ७ बार सिरस के पत्तों का ताजा रस डालकर सुखायें तथा समय पड़ने पर इन मिर्चों को घोट कर ठंडाई के समान पिलाने से सांप का विष दूर होता है।

६. सिरस का छिलका, सिरस की जड़ का छिलका, सिरस के बीज तथा इसके फूल प्रत्येक पांच-पांच मासे सबको बारीक पीसलें इसमें से छः मासे गोमूत्र के साथ प्रयोग करायें। दिन में तीन-चार बार देने से विषैले सर्प का विष भी उतर जाता है।

चूहे का विष :—सिरस की जड़ का छिलका मात्रा १ तोला जल के साथ देने से चूहे का विष दूर हो जाता है।

१. सर्वप्रकार का विष :—सिरस के बीज, छाल, पत्ते, मूल और फूल सब समभाग लेवें कूटकर इनमें से २ तोले का क्वाथ बनायें तथा इसमें त्रिकुटे का चूर्ण १ माशा रोगी को प्रयोग करावें इससे सर्वप्रकार के कीड़े मकोड़ों का विष दूर होता है।

२. सिरस की छाल, अर्जुन की छाल, माख कंगनी, लसोड़े की छाल, बड़ की छाल, गुलर की छाल, पीपल की छाल, पिलखन की छाल सबको समभाग लेकर जल के साथ ठंडाई बनाकर पिलाने तथा काटे हुए पर लेप करने से सर्वप्रकार का विष दूर होता है।

मेंढक का विष—सिरस के बीज थोहर के दूध में पीसकर लेप करने से सर्वप्रकार के मेंढकों का विष उतर जाता है।

विविध रोगों पर

जलोदर :—सिरस की छाल का क्वाथ बनाकर पिलाने से जलोदर की सूजन उतर जाती है ।

विसर्प—सिरस की छाल के चूर्ण को सौ बार घोये हुए घृत में मिलाकर लेप करने से विसर्प रोग समाप्त हो जाता है ।

अण्डकोषों की सूजन—सिरस की छाल को पीसकर लेप करने से अण्डकोषों की सूजन दूर होती है। अन्य सूजन भी इससे दूर होती हैं । सिरस के पत्ते के भफारे से भी सब इस प्रकार की सूजन दूर होती है ।

पित्त की सूजन—गर्मी के फोड़े, फुन्सी और पित्तशोथ सिरस के फूलों के लेप करने से दूर होते हैं ।

फोड़े—घावों के लिए भी सिरस अमृत तुल्य है । इससे बहुत लाभ होता है । पुराने और कठोर फोड़ों पर सिरस की छाल का लेप करने से फोड़ा ठीक होता है । पत्तों तथा छाल के क्वाथ के सेवन से भी बहुत लाभ होता है । हठिले फोड़ों को यह दूर करता है । न ठीक होने वाले फोड़ों को शिरीष ठीक कर देता है ।

घाव—सफेद सिरस की छाल का चूर्ण घाव पर भुरभुराने से न भरनेवाले घाव भी भर जाते हैं ।

१—कृमि रोग—सिरस के फूलों वा छाल का जल वा क्वाथ एक तोला प्रतिदिन पीने से पेट के कृमि कीड़े कुछ ही दिन में नष्ट हो जाते हैं ।

२—शिरीषारिष्ट दो तोले समान जल मिलाकर भोजन के पीछे लेवें इसके साथ बिडंग चूर्ण ३ मासे साथ ही लेवें तो अधिक लाभ होगा ।

पाठकों को यह सन्देश रहेगा कि ये जितनी औषध लिखी हैं ये काले सिरस की हैं वा पीले वा सफेद सिरस की हैं । वार्ता यह

हैं कि तीनों प्रकार के सिरसों के गुण मिलते जुलते ही हैं। थोड़ा बहुत अन्तर रहता है।

पीले सिरस को संस्कृत में पीत सिरस कहते हैं। इसके गुण-दोष और प्रभाव काले सिरस से मिलते-जुलते हैं। इसकी छाल को पीसकर लेप करने से कुष्ठ और हठिले सड़े हुये त्रणों (जख्मों) फोड़ों में लाभ होता है। इसके पत्तों को घी में भूनकर देने से खांसी नष्ट हो जाती है। पुराने और कठोर फोड़ों पर इसकी छाल का लेप किया जाता है। पीला सिरस वा सफेद सिरस दोनों एक ही प्रकार के हैं। इनमें भेद करना सामान्य लोगों के लिये कुछ कठिन ही है। गुण दोष प्रायः मिलते जुलते हैं। सफेद सिरस के पत्ते कृमिनाशक हैं। इसके पत्तों का पुल्टिस वा मुरता बनाकर त्रणों पर बांधा जाता है। शेष सभी गुण मिलते हैं इसलिए समय पर जो भी सिरस मिल जाये उसी का उपयोग कर लेवें। वैसे काले सिरस में अधिक गुण होते हैं किन्तु वह दुर्लभ है। स्वयं अपने खेतों घरों वा वाटिका में बो देवें तो बहुत सुलभ हैं। फिर स्वयं ही बड़ी संख्या में यह फल जाता है। यह हमारा अनुभव है।

दन्तरोग

१. शिरीष को छाल के क्वाथ से कुल्ले करने से दांतों के कृमि रोग तथा दन्त पीड़ा दूर होती है।

२. मसूड़े के रोग—शिरीष की मूल के त्वक् वा छाल का चूर्ण पीसकर उसका प्रतिदिन मञ्जन करने से मसूड़ों का सूजना पीप वा रक्त आना आदि रोग मिट जाते हैं और दांत सुदृढ़ हो जाते हैं।

३. शिरीष की छाल के काढ़े से कुल्ले करने से दांत रोग शहित होकर सुदृढ़ होते हैं।

श्रीगन कथा... २३७०

४. शिरस के बीज १ तोला, काली मिर्च छः माशे दोनों को खूब बारीक पीस लें। दुखते हुए दांत दाढ़ वा मसूड़ों पर मलें। उसी समय पीड़ा दूर होगी। मञ्जन करने के पीछे आघ घण्टे तक कुल्ली न करें। कुल्ली भी गर्म पानी से करें ठण्डे जल से नहीं। शीघ्र तथा शीतल जल से कुल्ली करने से पीड़ा पुनः हो जाती है। इस मञ्जन को प्रतिदिन करने से दाँतों के सभी रोग दूर होते हैं।

५. शिरस की जड़ का छिलका छाया में सुखाकर पीसकर मञ्जन बना लेवें और प्रतिदिन प्रातःकाल हिलते हुए दाढ़ तथा दाँतों पर मलें कुछ ही दिनों में हिलते हुये दाँत जम जायेंगे। यदि दाँत बिल्कुल जड़ न छोड़ चुके हों तो फिर से पत्थर के समान जम जायेंगे। दोनों समय प्रातः सायं मञ्जन करें। कुछ दिनों में लाभ होने लगेगा। अधिक समय तक प्रयोग करने से पूर्ण लाभ होगा। इसके प्रयोग से मसूड़ों की सूजन, पीड़ा, पीप आना आदि रोग शीघ्र दूर होते हैं।

दातुन

शिरस की दातुन दन्तपीड़ा मसूड़ों की सूजन दूर करती है तथा दाँतों को निरोग और सुदृढ़ बनाती है।

दन्त-पीड़ा

यदि सारे दाँतों में पीड़ा रहती हो। ठण्डा जल वा गर्म जल भी पीड़ा करता हो तो शिरस की छाल का क्वाथ बनाकर कुल्ला करने से प्रथम बार ही लाभ होता है। बार-बार कुल्ला करने से दाँत पीड़ा से मुक्त हो जाते हैं। डाक्टर देसाई के मत में इसकी छाल के काढ़े से कुल्ले करने से दाँत नीरोग तथा सुदृढ़ होते हैं। अतः दाँतों की सुरक्षार्थ इनका प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

बच्चों के दाँत

शिरस के ताजे बीजों की माला बनाकर पहिनाते से बच्चों के

दांत निकलने के समय कष्ट नहीं होता। माला यदि दोहरी बनाई जाये तो और भी अधिक लाभ होता है। बच्चों के हरे पीले दस्त आंख दुःखना ज्वरादि कष्ट नहीं होते। यह औषध है इसको भी तावीज का नाम देकर पाखण्डी ठगते हैं।

सिर की पीड़ा

१. सिरस के बीजों को जल के साथ पीसकर वस्त्र की पोटली में बांधकर जिस और सिर में पीड़ा हो उसी और के नाक के छिद्र में दो तीन बून्दें टपकाने से आघाशीशी अर्थात् आधे सिर की पीड़ा मिट जाती है। इसका प्रयोग कई दिन करना चाहिये।

सूर्यावर्त्त आघाशीशी—यह सिर की पीड़ा सूर्य के निकलने के साथ सिर के आधे भाग में होती है तथा दोपहर तक बढ़ती है। फिर घट जाती है वा हट जाती है। यह आघाशीशी की पीड़ा (दर्द) बहुत ही भयङ्कर होती है जिसको यह पीड़ा होती है उसकी जान को आजाती है। उस को रुलाकर छोड़ती है। जब यह अधिक मात्रा में होती है तो रोगी का सिर चकराता है कनपटी फटने लगती है। चक्षुओं के सन्मुख चिंगारियां सी उड़ने लगती हैं। जो मिचलाता है। कनपटी की रगें जोर से फड़कने लगती हैं। सिर फटता सा है। रोगी को असह्य पीड़ा होती है। रोगी को प्रकाश भी अच्छा नहीं लगता।

२. योग नं० १ से भी इसमें लाभ होता है। शिरस श्वेत के बीजों को छाया में सुखा लें, इन्हें कूट छानकर खूब बारीक सुरमे के समान पीस लेवें। यह अच्छी सूंघने की नस्य बन जाती है। इसे शीशी में सुरक्षित रखें। आघाशीशी के रोगी को सूर्योदय से पूर्व ही सुंघायें, जिस और आधे सिर में पीड़ा होती हो उस के विपरीत नाक के छिद्र से सुंघायें तो शीघ्र ही छींकें आयेंगी। पीड़ा होने से

रोगी बच जायेगा । यदि पीड़ा हो रही हो तो छीकें आकर पीड़ा शान्त हो जायेगी । विजातीय द्रव्य नासिका द्वारा निकल जायेगा ।

३. यह शिरस के बीजों की नस्य सिर की पीड़ा किसी भी प्रकार की हो सभी में लाभ करती है । इसकी नस्य सभी प्रकार के सिर दर्दों में लाभदायक है ।

४. जब पीड़ा हो उससे १ घण्टा पूर्व शिरस के ताजा फूल लेकर नाक से लगाता सूँघते रहो, पीड़ा नहीं होगी । प्रतिदिन इसी प्रकार करें, कुछ दिन के पश्चात् पीड़ा होनी बन्द हो जायेगी । जब भी किसी के सिर में पीड़ा हो तो शिरस के ताजा पुष्प सूँघने से दूर हो जायेगा ।

५. लेप—शिरस के ताजा फूल खरल में डालकर जल के साथ रगड़ें और बारीक पीसकर इसको माथे तथा कनपड़ियों पर लेप करें, पीड़ा नष्ट होगी । शिरस के ताजा फूल सदैव नहीं रहते अतः फूलों के दिनों में फूल इकट्ठे कर लें, जब आवश्यकता पड़े इन्हें बारीक पीसकर जल मिलाकर लेप करें, पीड़ा नष्ट हो जायेगी । उपरोक्त लेप तथा नस्य सभी प्रकार की सिर की पीड़ा-नाशक है, सिर दर्द को दूर करने के लिए इनका प्रयोग अवश्य करना चाहिये ।

६. कुछ वैद्यों का मत है कि पीड़ा जिस ओर के सिर में हो उसी ओर के नाक के छिद्र से शिरस की नस्य वा फूल सुँघायें तथा कुछ का मत है कि जिस ओर पीड़ा हो उससे विपरीत नाक के छिद्र से नस्य आदि देनी चाहिये ।

कुष्ठ

१—इसकी छाल को पीसकर लेप करने से कुष्ठ तथा हठीले फोड़ों तथा व्रणों में लाभ होता है ।

४. श्वेत कुष्ठ—शिरस १॥ तोले पत्तों को २ मासे काली मिर्च के साथ पीसकर देने से ४० दिन में पर्याप्त लाभ होता है। रक्त कितना ही दूषित हो, इससे शुद्ध हो जाता है और उपदंश और कुष्ठ भी मिट जाते हैं।

३—शिरस का सत्त्व १ माशा प्रतिदिन मधु में मिलाकर प्रातः सायं लेने से सभी प्रकार के कुष्ठ निरन्तर लम्बे प्रयोग से दूर होते हैं।

४—शिरीषारिष्ट प्रतिदिन सेवन करने से रक्त शुद्ध होकर फोड़े फुन्सियां खुखली दाद कुष्ठ सभी रक्त रोग दूर होते हैं।

५—शिरस के बीजों के तैल की मालिश करने से श्वेत कुष्ठ में लाभ होता है। कुष्ठ के हो जाने पर इसको दूर करने के लिए इन प्रयोगों का अवश्य सेवन करें।



भारत के प्राचीन मुद्रांक

लेखक—स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती ।

मूल्य—५०१ रु०

इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ में भारत के प्राचीन प्रसिद्ध नगर कौशाम्बी, अहिच्छत्रा, रोहीतक, प्रकृतानाकनगर, सुनेत, स्रुघ्न आदि से प्राप्त प्राचीन मुद्रांकों (मोहरों) का सचित्र व्याख्यान किया गया है । हिन्दी भाषा में इस विषय का यह पहला ग्रन्थ है । स्वामी जी महाराज ने अपने जीवन के पन्द्रह वर्ष तथा लाखों रुपये लगाकर यौधेय, वृष्णि, पाञ्चाल आदि गणराज्यों तथा मित्र; सोम, गुप्त, भद्र; देव और शर्म आदि कुलों के राजकीय और सेनापति, महासेनापति आदि के व्यक्तिगत हजारों मुद्रांक ढूँढ़ निकाले हैं । महाभारत के अनन्तर लुप्त हुए भारतीय प्राचीन इतिहास की टूटी कड़ियों को जोड़ने में ये मुद्रांक अपना विशेष स्थान रखते हैं । उन्हीं का विशद वर्णन प्रस्तुत ग्रन्थ में किया गया है ।

इसी भाँति प्राचीन अस्त्र-शस्त्र, प्राचीन लक्षण स्थान (टकसाल) मृन्मूर्तियाँ, प्रस्तरमूर्तियाँ और मुद्रांकों के भी ग्रन्थ श्री स्वामी जी महाराज लिख रहे हैं जो शीघ्र ही पाठकों के सम्मुख आयेंगे । ऐसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की प्रतियाँ प्रत्येक व्यक्ति, गुरुकुल; स्कूल और कालिजों के पुस्तकालयों को अवश्य रखनी चाहियें । जिससे भारत के प्राचीन गौरव की जानकारी हो सके ।

प्रकाशक—

हरयाणा प्रान्तीय पुरातत्त्व संग्रहालय,

गुरुकुल भुज्जर रोहतक (हरयाणा)

दूरभाष : ४४

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१ प्रदीप-उद्धोत-विमर्श सहित व्याकरणमहाभाष्यम् १८०.००	२३ पोप की नाखर .३०
२ छन्दःशास्त्रम् ४.००	२४ पाखण्ड खंडनी १.७५
३ काव्यलंकारसूत्राणि २.००	२५ बस्तीराम अग्निबारा १.००
४ कारिकाप्रकाश २.००	२६ वैदिक भारत में यज्ञ २.००
५ दयानन्दलहरी १.२५	२७ दो महात्मा (ईसा, दयानन्द) १.००
६ ब्रह्मचर्यामृतम् .५०	२८ माया का खेल २.५०
७ विरजानन्दचरितम् १.५०	२९ सामयिक समाधान .५०
८ नारायणस्वामिचरितम् ७५	३० बाल शिक्षा .३५
९ ब्रह्मचर्यशतकम् .६५	३१ मनोविज्ञान शिव सकल्प ५.००
१० गुरुकुलशतकम् .५००	३२ वेद प्रवेश (१-२ खण्ड) २-५०
११ ब्रह्मचर्यमहत्त्वम् .५०	३३ आर्य सामाजिक धर्म .७५
१२ चारुचरितामृतम् १.००	३४ फिट् सूत्र प्रदीप १.००
१३ भारतेतिहासः ३.००	३५ महर्षि दयानन्द जीवन २.२५
१४ तत्त्वबोध १.००	३६ वेद विमर्श (प्रथम भाग २.००
१५ लिङ्गानुशासनवृत्तिः १.२५	३७ आसनों के व्यायाम १.५०
१६ स्थावरजीव मीमांसा २.००	३८ सुखी जीवन २.२५
१७ विरजानन्दचरित (हिन्दी) १.५०	३९ घर का वैद्य (दोनों भाग) ३.२५
१८ महर्षि दयानन्द जीवन कथा (भजन) .७५	४० रामप्रसाद बिस्मिल .७५
१९ असली अमृतगीता १ भाग .७५	४१ ईशोपनिषद् व्याख्या .७५
२० असली अमृतगीता २ भाग .७५	४२ संस्कृत प्रबोध १.५०
२१ बस्तीराम रहस्य .५०	४३ एक सत्पुरुष की दिनचर्या १.२५
२२ मानस-दीपिका १.५०	४४ जीव का परिमाण .७५
	४५ कन्या और ब्रह्मचर्य .२५

प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान पो० गुरुकुल भज्जर, रोहतक

स्वामी श्रीमानन्द की रचनायें

१ हरयाणा के प्राचीन मुद्रांक	५०१-००	१६ ब्रह्मचर्य के साधन ५ भाग (स्नान, संध्या, यज्ञ)	१-००
२ वीरभूमि हरयाणा	४-००	२० ब्रह्मचर्य के साधन ६ भाग (प्राणायाम)	६-५०
३ शेरशाह सूरी	-७५	२१ ब्रह्मचर्य के साधन ७, ८ भाग (सत्संग, स्वाध्याय)	१-००
४ वीर हेमू	-७५	२२ ब्रह्मचर्य के साधन ८ भाग (भोजन)	१-५०
५ मांस मनुष्य का भोजन नहीं	१-००	२३ ब्रह्मचर्य के साधन १० भाग (निद्रा)	-५०
६ ब्रह्मचर्यामृत	-३०	२४ ब्रह्मचारी की भेखला	-६०
७ बालविवाह से हानियां	-२०	२५ रूस में १५ दिन	-५०
८ स्वनदोष चिकित्सा	-३०	२६ हरयाणा का संक्षिप्त इतिहास	-५०
९ बिच्छू विष चिकित्सा	-२०	२७ मेरी विदेश यात्रा	-७५
१० पापों की जड़ (शराब)	-३५	२८ जापान यात्रा	-७५
११ हमारा शत्रु (तम्बाकू)	-३५	२९ शराब से सर्वनाश	-५०
१२ नेत्र रक्षा	-५०	३० काला पानी यात्रा	-६०
१३ व्यायाम का महत्व	-५०	३१ घरेलु औषध हल्दी	-५०
१४ राजराज्य कैसे हो	-२०	३२ घरेलु औषध लवण	-५०
१५ हरयाणा के वीर योधेय	७-००	३३ भारतीय जड़ी बूटी आक	१-००
१६ ब्रह्मचर्य के साधन १-२ भाग	-६०	३४ " " नीम	१-००
१७ ब्रह्मचर्य के साधन ३ भाग (दन्त रक्षा)	-४०	३५ " " पीपल	१-००
१८ ब्रह्मचर्य के साधन ४ भाग (व्यायाम सन्देश)	१-५०		

प्रकाशक

हरयाणा साहित्य संस्थान,
पो० गुरुकुल भुज्जर, रोहतक